मैं भारत हूँ

भारतीय सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक भावना को प्रेरित करती पत्रिका

वर्ष-१२, अंक-०५ अगस्त २०२२ मुम्बई सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ३६ मूल्य १००.०० रूपए

सुंदराबाई खंडेलवाल टॉवर

तपे हनुमान मंदिर

असदगढ़ किला

अकोला

श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ

राज राजेश्वर मंदिर

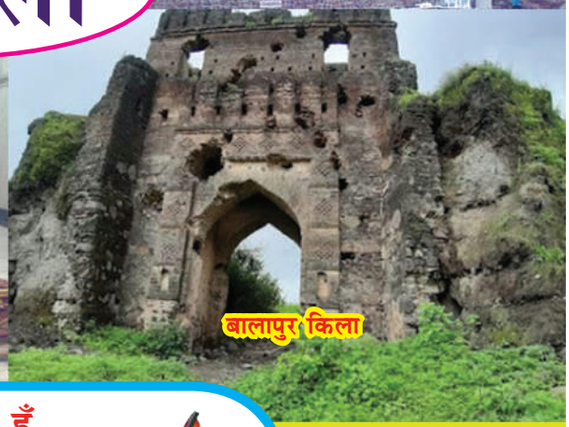

बालापुर किला

मैं भारत को 'भारत' ही बोलता हूँ
आप भी बोलें
'भारत' को केवल 'भारत'

निवेदनकर्ता

बिजय कुमार जैन

वरिष्ठ पत्रकार व संपादक

राष्ट्रीय अध्यक्ष :- मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भ्रमणध्वनि :- 93223 07908

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

Remove INDIA Name From the Constitution INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए INDIA नहीं

मैं भारत हूँ
mailgaylordgroup@gmail.com

यह है हम भारतवासियों का भारत सरकार से निवेदन

जरूर देखें : http://www.mainbharathun.co.in

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

मेरा राजस्थान

राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए

पधारो म्हारे देश

राजस्थान का इतिहास पहुँचाए आपके हाथ

पंजीकृत कार्यालय

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरध्वनि: ०२२-२८५० ९९९९ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com

विशेष छूट विज्ञापन देने पर पूरे साल 'मेरा राजस्थान' पत्रिका मुफ्त

वार्षिक शुल्क 1,111/-
आजीवन शुल्क 11,111/-

मात्र रु. 100/- में, प्रति महिना

सम्पादक
बिजय कुमार जैन

उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'

कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

नीम लगायें पर्यावरण बचाये

Vishvas trust

digital partner DIGITAL KHIDKI

LIONS CLUB OF CALCUTTA KANKURGACHHI

DIST: 322B2

अपने अपने राम

(संगीतमय रामकथा)

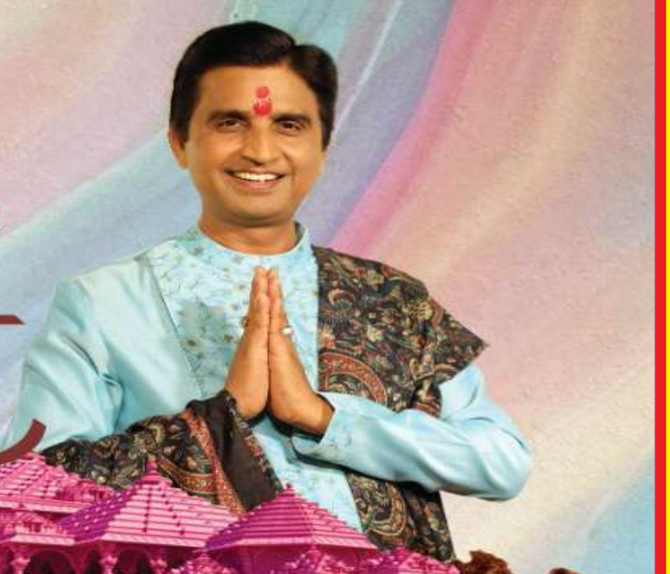

विश्व विख्यात राम कथा मर्मज्ञ एवं युग-वक्ता

डॉ. कुमार विश्वास

26, 27, 28 August 2022
4 pm onwards
Netaji Indoor Stadium

दीपू शर्मा
सभापति

सूरज चोखानी
अध्यक्ष

नितिन अग्रवाल
उप-सभापति

मनमोहन बागड़ी
उप-सभापति

अंकित झुनझुनवाला
सचिव

निशित कनोडिया
कोषाध्यक्ष

प्रवीण खेतावत
संयोजक

स्वागत समिति

अमित गुप्ता (के.सी. सिक्योरिटीज)
अनिल कुमार खेमका (अपर्णा)
अशोक कुमार टोडी (लक्स इंडस्ट्रीज)
बजरंगलाल बामलवा (नेमीचंद)
बनवारी लाल सोठी (एसोसिएटेड रोड कैरियर्स)
बिमल दीवान (दीवानसन)
बीरम प्रकाश सुल्तानिया (ए-फर्स्ट)
डीके सराफ (आनंदलोक)
दीपक अग्रवाल (शाकंभरी)
गजानंद मुनका (सबुरी प्लाई)
घनश्याम सारदा (सारदा ग्रुप)
गोपाल शर्मा
हरि किशन राठी (विको)
हरि कृष्णा चौधरी (विक्रम)
हरि टिब्रेवाला (दुबई)
कमल किशोर गांधी
कमल कुमार दुगर (बीएमडी ग्लोबल)
मनोज गुप्ता (कम्फर्ट लेडी)
मयंक जोशी (मयंक कृतिका फाइनेंशियल)
मोहन कुमार जैन (रंगोली)
नंद किशोर पंसारी (प्राइमार्क)
नंदलाल रूंगटा (रूंगटा माइंस)
ओम प्रकाश जालान (बंगाल एनर्जी)
पवन कुमार धूत (धूत ग्रुप)
पवन कुमार रुइया (हनलप)
पवन पटोदिया (थंडरबोल्ट)
प्रकाश कुमार दमानी (एपीएल मेटल्स)
राजीव कनोदिया (बालमुकुंद)
राजेंद्र खंडेलवाल (धनवंतरी)
राजेश अग्रवाल (गणपति कैटरर्स)
राजेश मित्तल (ग्रीनप्लाई)
रजनी कांत बालासरिया (गोकुल)
राम चंद्र जोशी (राघव गृह)
रामलाल तिवारी
संतोष कुमार लाहोटी
श्रीराम टिब्रेवाला
विक्की राज सिकारिया (सिकरिया ग्रुप)
विनोद कुमार गुप्ता (हॉलर)
सुरेश गोयल (बी डी कास्टिंग)

SCAN ME
FOR PASSES SCAN QR CODE

सहयोगी संस्था

आचार्य महाप्रज्ञ महाश्रमण एजूकेशन एण्ड रिसर्च फ़ाउण्डेशन

महाराजा अग्रसेन धाम
कुलोदय दुर्गा सेवा ट्रस्ट

पूर्वांचल कल्याण आश्रम
पश्चिम बंगा प्रादेशिक मारवाडी सम्मेलन

प्रचार-प्रसार सहयोगी

श्वेताम्बर जैन दिगम्बर जिनागम

मेरा राजस्थान
राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

मैं भारत हूँ
भारतीय राजनीति में शीर्ष एकमात्र पत्रिका

हमारा अगला विशेषांक सितम्बर २०२२

महाराजा अग्रसेन जयंती

२६ सितम्बर

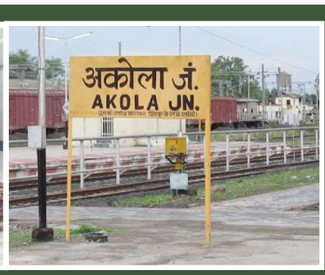

प्रकृति की सुंदरता को सजाए हुए महाराष्ट्र का एक जिला 'अकोला' के इतिहास प्रकाशन पर 'मैं भारत हूँ' परिवार को हार्दिक शुभकामनायें

राजेश रामरतन लड्ढा
Mob : 9823036219/ 9403070861
मे. राजेश्वर रिमोलडींग वर्क्स
थंडा या गरम टायर रिमोलडींग ट्रॅक्टर से ऑटो तक

नॅशनल हायवें नं,६, एम.आई.डी.सी. ऑफिस के सामने, शिवर (शिवणी) अकोला, महाराष्ट्र भारत-४४४००१

'अकोला' के इतिहास प्रकाशन पर 'मैं भारत हूँ' परिवार को हार्दिक धन्यवाद

पुरुषोत्तम नारायण दास खटोड़
Mob. : 9422861371
अंबरिश दाल मिल
शिव एजेंसीज
एम.आई.डी.सी., खटोड़ मल्टी स्पेशलिस्ट डेंटल क्लीनिक, आर.एल.टी.कॉलेज के सामने, अकोला, महाराष्ट्र, भारत-४४४००१

हिंदी भाषा शताब्दियों से राष्ट्रीय एकता का माध्यम है- बिजय कुमार जैन

www.gattaniplywood.com

Find us:

XPECT THE UNXPECTED

QUALITY PRODUCTS RANGE

Gattani
PLY • LAM • WPC

Obsession for Quality Product

Mr & BWR Ply, Shuttering Ply, Flexi Ply,
Water Proof Flush Door, Membrane Flush Door,
100% Pine Block Board, Laminate & WPC/PVC

MANUFACTURED in ASSAM | E1 GRADE RESIN | GLP INSIDE | POWER BONDING | TERMITE PROOF | BORER FREE | WATER PROOF

GATTANI INDUSTRIES

Mariani Road, Cinnamara, Jorhat, Assam-785008
+91-8134954558, +91-9678008988 info@gattaniplywood.com

मैं भारत हूँ

वर्ष -१२, अंक ०५, अगस्त २०२२

वार्षिक मुल्य
रु.१११११/-
१२ अंकों का

सम्पादक - बिजय कुमार जैन

उपसंपादक - संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)

- 'मैं भारत हूँ' में प्रकाशित लेखों/ कविताओं/समाचारों/ विज्ञापनों से पूर्ण सहमत होना सम्भव नहीं है।
- 'मैं भारत हूँ' से सम्बन्धित समस्त विवादों के लिये न्याय क्षेत्र अंधेरी, मुम्बई ही मान्य माना जायेगा।

सम्पादकीय मुख्य कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र,
भारत - ४०० ०५९
दूरभाष :- ०२२-२८५० ९९९९
अणु डाक :- mailgaylordgroup@gmail.com

अन्तरताना:- www.mainbharathun.co.in

कृपया विज्ञापन बिल की राशि का भुगतान
नीचे दिये गए बैंकों में जमा करा सकते हैं

HDFC Bank
Andheri East Branch
RTGS / NEFT
IFSC: HDFC 0000592.
Account No.05922320003410

State Bank Of India
(01594) Marol Mumbai Branch.
IFS Code :SBIN0001594.
Account No. 030338727406.
in the name of GAYLORD PUBLICATIONS PVT.LTD.
Payment Transfer & Inform to us on: 9322307908

सम्पादकीय ....

७ अगस्त २०२२ को भारत नाम के आजादी की तारीख लिखी गयी

दिल्ली में भव्यातिभव्य कार्यक्रम का सफलतम आयोजन

समस्त भारतवासी जो 'भारत' में रहते हैं या विदेश में, जानते हैं कि एक जद्दोजहद 'भारत' में छिड़ गयी है कि अब तो भारत को India नाम के गुलामी से छुटकारा मिले और इसके लिए 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' के पदाधिकारी कटिबद्ध हैं जो पिछले १२ सालों से लगातार हर भारतीयों के दिलों में भारत माँ के प्रति श्रद्धा, प्यार व सम्मान का कार्य करते चले आ रहे हैं। माध्यम चाहे ज़ूम वेबीनार, फेस बुक, ट्वीटर, इन्स्ट्रा या कोई भी सोशल मीडिया हो या प्रिंट मिडिया हो बस निवेदन/अलख जगाए चले जा रहे हैं कि

भारत को केवल भारत ही बोलें INDIA नहीं

हम सभी जानते भी हैं कि INDIA गुलामी का नाम है जिस नाम को भारतीय संविधान के अनुच्छेद क्र.१ (Article No.1) से विलुप्त करवाना है जिसके लिए भारत सरकार भी कटिबद्ध है।

'भारत' नाम सम्मान की श्रृंखला में गत दिनों एक भव्यातिभव्य कार्यक्रम 'भारतीय प्रतिबिम्ब कल-आज और कल' का आयोजन दिल्ली के जनपथ पर स्थित डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर अंतर्राष्ट्रीय सेन्टर में ७ अगस्त २०२२ को किया गया, जिसमें भारतीय क्षितिज के राजनैतिज्ञ, पत्रकार, उद्योगपति, समाजसेवी व मैं भारत हूँ फाउंडेशन के देश-विदेश से कार्यकर्ता, नमह भारत फाउंडेशन व दिल्ली तेरापंथी सभा के सैकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित थे, जिनके मध्य 'भारत नाम सम्मान' गीत का भी नृत्य के साथ विमोचन किया गया, बतादें कि गीत का निर्माण हयूस्टन अमेरिका निवासी अरूण जी मूंदड़ा ने किया जो कि मैं भारत हूँ फाउंडेशन के विदेश के संयोजक भी हैं और कार्यक्रम की सफलता के लिए अमेरिका से भारत आए थे।

श्री अरूण जी मूंदड़ा ने कहा कि जब तक 'भारत' माँ स्वनाम से विश्व में नहीं पहचानी जाएगी, गुलामी का नाम INDIA भारतीय संविधान से विलुप्त नहीं हो जाएगा, हम विदेश में रहने वाले भारतीय चैन से नहीं बैठेंगे। भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी से निवेदन करते रहेंगे कि वे भारतीय संसद में एक याचिका लाएं और गुलामी का नाम INDIA भारतीय संविधान से हटवाएं।

'मैं भारत हूँ' का प्रस्तुत अंक भारत का एक राज्य महाराष्ट्र स्थित 'अकोला' जिला के इतिहास के साथ है, प्रबुद्ध पाठकों को कैसा लगा, कृपया ज्ञात करवाएं।

हमारे पूर्वजों ने कहा है कि हम इंसान हैं हम-सभी से भूल-चूक होना स्वाभाविक है। गत वर्ष मुझसे जाने-अनजाने में कोई भूल-चूक हो गयी हो या किसी का दिल दु:खाया हो तो तहे दिल से क्षमा याचना करता हूँ।

जय भारत!
जय भारतीय संस्कृति!

राष्ट्र की परिभाषा
भाव-भूमि-भाषा

आपका अपना
बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय

जन-जन की आशा है हिंदी, भारत की भाषा है हिंदी-बिजय कुमार जैन

॥ श्री मुनिसुव्रतनाथाय नमः ॥

श्री १००८ मुनिसुव्रतनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र,

पैठण, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

सस्नेह निमंत्रण

जरुर पधारीएगा..!
पुण्यार्जन किजीएगा..!

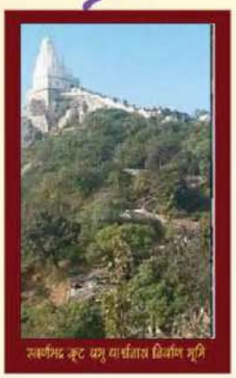

स्वर्णगिद्र कूट प्रभु वर्धमान निर्वाण भूमि

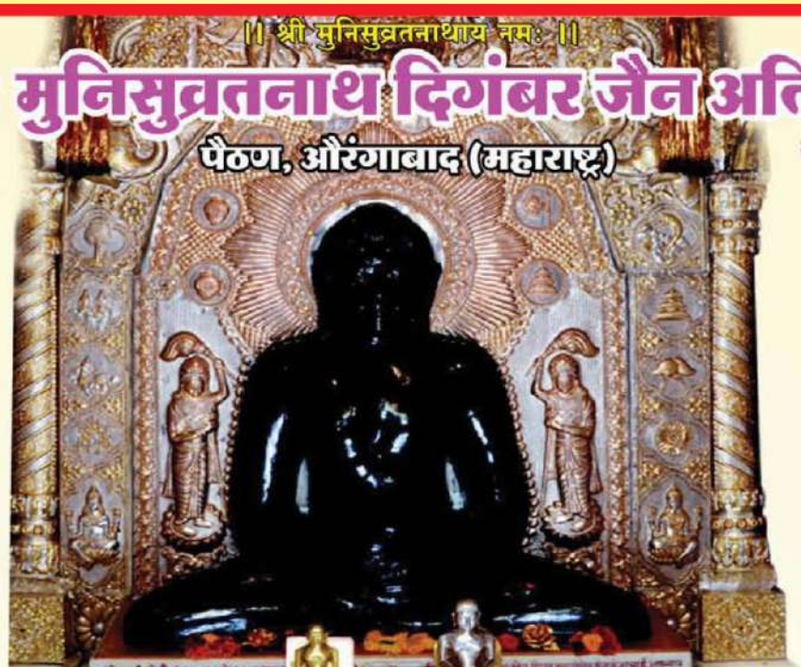

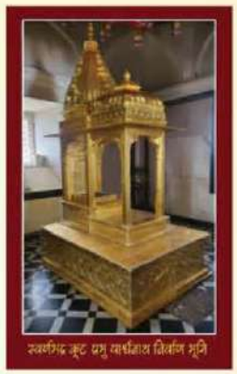

स्वर्णगिद्र कूट प्रभु वर्धमान निर्वाण भूमि

मंगल आशिष...

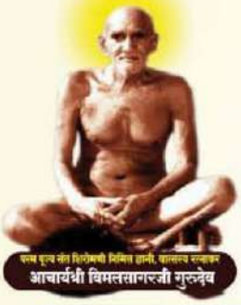

परम पूज्य संत शिरोमणी निमित्त ज्ञानी, वात्सल्य रत्नाकर
आचार्यश्री विमलसागरजी गुरुदेव

मंगल आशिष...

तपस्वी सिरताजी एवं तपोनिष्ठ कुल दिवाकर, शांत तपस्वी,
डॉ. अंतर्मना आचार्यश्री प्रसन्नसागरजी गुरुदेव

महामस्तकाभिषेक महोत्सव

शनि अमावस्या,
शनिवार, २७ अगस्त २०२२

मंगल आशिष...

परम पूज्य युगप्रधान कैवली
आचार्यश्री सिद्धांतसागर जी महाराज

मंगल सानिध्य

परम पूज्य बालयोगी आचार्य
श्री १०८ सौभाग्यसागरजी गुरुदेव

धर्मानुरागी तीर्थ भक्त सज्जनो,

सेवा में सुचित करते हुए अत्याधिक प्रसन्नता होती है की, महाराष्ट्र प्रांत का सुप्रसिद्ध प्राचीन ऐतिहासिक तथा जन जन के श्रद्धा आराधना का प्रमुख केंद्र श्री १००८ मुनिसुव्रतनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र पैठण में शनिवार दि.२७ अगस्त २०२२ को शनि अमावस्या के अवसरपर तप चक्रवर्ती, साधना महोदधि, परम तपस्वी, डॉ. अंतर्मना आचार्यश्री प्रसन्नसागरजी गुरुदेव के मंगल आशिर्वाद से तथा परम पूज्य बालयोगी आचार्य श्री १०८ सौभाग्यसागरजी गुरुदेव के ससंघ सान्निध्य में शनिग्रह अरिष्टनिवारक मुलनायक श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का महामस्तकाभिषेक महामहोत्सव का आयोजन किया गया है । यहाँ पर हर शनि अमावस्या को हजारो की संख्या में यात्री गण आते है। भुगर्भ में विराजीत वालुका की चतुर्थ कालिन मुलनायक श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान की विशाल, भव्य एवं अत्यंत मनोज्ञ मुर्ति के दर्शन, अभिषेक, पुजन के व्दारा भक्त सम्यक मनोवांच्छित फल को प्राप्त करते है। आइए इस पुण्यमय अवसरपर अधिक से अधिक संख्या में सम्मिलीत होने के लिए आप सहपरिवार सादर आमंत्रित है।

❊ वात्सल्य महाप्रसादी पुण्यार्जक परिवार ❊

हमारे आराध्य गुरुदेव संत शिरोमणी निमित्त ज्ञानी
परम पूज्य आचार्य रत्न श्री १०८ विमलसागरजी महाराज के शुभ आशीर्वाद एवं
पूज्य माता-पिता श्रीमती लक्ष्मीबेन चिमनलाल बोरा के प्रेरणा से

श्रीमती आशा-संजयजी बोरा,
पत्नी, जिंतेश, नयन, आकांक्षा,
लड्यजी, सुवाही, विहान बोरा, मुंबई

❊ मांगलिक कार्यक्रम ❊

शनिवार दि.२७ अगस्त २०२२ को सुबह ८.०० बजे
शनिग्रह अरिष्टनिवारक मुलनायक श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान

सुबह ११.३० बजे से
शनिग्रह अरिष्टनिवारक मूलनायक श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का
महामस्तकाभिषेक महामहोत्सव एवं परम पूज्य बालयोगी
आचार्य श्री १०८ सौभाग्यसागरजी गुरुदेव
का मंगल प्रवचन तत्पश्चात महाप्रसादी

❊ प्रमुख अतिथि ❊

श्रीमान आर.के.जैन
माजी अध्यक्ष (अखिल भारतीय दिगंबर कमेटी, मुंबई)
श्रीमान अनिलजी जमगे
अध्यक्ष (महाराष्ट्र प्रांत दिगंबर कमेटी, मुंबई)
परम गुरु भक्त श्रीमान मनोजजी चौगरी
दैराबाद - दिल्ली
परम भक्त श्रीमान किशोरकुमारजी शाह
भायखली
परम भक्त श्रीमान संजयजी पापडीवाल
पैठण

मंच संचालन - बोली सम्राट श्री प्रविणजी लोहाडे

❊ अध्यक्ष - महावीर बडजाते - 9823024011 ❊ महामंत्री - विलास पहाडे - 9422204497 ❊ कोषाध्यक्ष - विजय पापडीवाल - 9422204409

❊ विश्वस्त - प्रमोद कासलीवाल, जयकुमार बाकलीवाल, रायचंद भूस, मनोज काला, प्रकाश कासलीवाल, कैलास पाटणी, किशोर भाकरे, सुमित गंगवाल, डॉ.संजय गंगवाल, डॉ.राजेंद्र काला, स्वदेश पांडे, अभिजीत काला

विश्वस्त मंडल एवम् दिगम्बर जैन समाज, पैठण

श्री राजेश जैन 9404000418 पंडीतजी श्री दिपक जैन 8329379915

बैंक डिटेल
नाम - श्री १००८ मुनिसुव्रतनाथ
दिगंबर जैन मंदिर अतिशय क्षेत्र, पैठण
STATE BANK OF INDIA PAITHAN (M.S)
A/C NO. 11400787433
IFSC CODE : SBIN0003796

BANK OF BARODA PAITHAN (M.S)
A/C NO: 41300100002526
IFSC CODE : BARB0PAITHA

क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधा :- अ.सी.रुम, अटेच रुम, ऑर्डर देने पर भोजन, चाय, नास्ता, डाईनिंग हॉल, सभागृह, विमलसागर हॉल, पार्किंग, किचन हॉल, गार्डन

अगली शनि अमावस्या दि.२१ जनवरी २०२३ को है।

भारत का हो संवैधानिक एक ही नाम
'इंडिया नहीं भारत ही है असली पहचान'
मैं भारत हूँ फाउंडेशन ने आयोजित किया भव्यातिभव्य कार्यक्रम
'भारतीय प्रतिबिम्ब कल-आज और कल'

नई दिल्ली: 'मैं भारत हूं फाउंडेशन' व 'नमह भारत फाउंडेशन' द्वारा रविवार ७ अगस्त २०२२ को नई दिल्ली स्थित डॉ. आम्बेडकर इंटनेशनल सेंटर में 'भारतीय प्रतिबिम्ब कल-आज और कल' नामक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, इस दौरान सभी आगंतुकों ने देश के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक व सामाजिक महत्व का जिक्र करते हुए देश का एक ही नाम 'भारत' ही रहे इसकी मांग की। परम श्रद्धेय प्रातः पूजनीय गोविंद देव गिरी जी (कोषाध्यक्ष श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट) ने वीडियो कांफ्रेंस के द्वारा सभा को संबोधित कर कार्यक्रम की सफलता के लिए आशीर्वाद ही नहीं दिया बल्कि यह भी कहा कि एक दिन विश्व में मां भारती जरूर कहेगी कि 'मैं भारत हूँ' केवल भारत!

आजादी के ७५वें वर्ष पर देश भर में मनाये जा रहे 'अमृत महोत्सव' के उपलक्ष्य पर देश के गौरवशाली इतिहास की जानकारी देते हुए अपनी बात रखी, इस दौरान दैनिक 'पंजाब केसरी' की निर्देशक व वरिष्ठ नागरिक श्रीमती किरण चोपड़ा ने कहा कि यहां कोई मुम्बई से आया और कोई गुजरात से, लेकिन मैं 'भारत' से हूं, उन्होंने कहा कि जिस परिवार से मैं हूं उसके मायने ही 'भारत' है। अपने देश के लिए मर मिटना 'भारत' है। समर्पण, त्याग व बलिदान 'भारत' है। आज ऋषियों के कारण ही हमारी संस्कृति संरक्षित है। अंग्रेजों ने तो देश को खूब लूटा लेकिन ऋषियों ने देश की संस्कृति को पुर्नस्थापित किया, उन्होंने कहा कि मोदी जी के नेतृत्व में देश आत्मनिर्भर और सशक्त हो रहा है, यह सिलसिला आगे बढ़ता जायेगा, वहीं वरिष्ठ भाजपा नेता व दिल्ली के पूर्व प्रभारी श्याम जाजू ने कहा कि हमें राजनीति से ऊपर उठकर इस मुद्दे पर विचार करना चाहिए कि भारत को केवल 'भारत' ही बोला जा सके।

'मैं भारत हूं फाउंडेशन' के राष्ट्रीय अध्यक्ष बिजय कुमार जैन ने कहा कि जब १७वीं शताब्दी में ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में आई तो अंग्रेजों ने 'भारत' का नाम इंडिया कर दिया, लेकिन हमारी मांग है कि देश का केवल एक ही नाम 'भारत' रहे, इस मुददे पर हम सभी साझा प्रयास कर रहे हैं, इसके लिए आप सभी को मैं धन्यवाद भी देता हूं। देश के वरिष्ठ पत्रकार व राजनैतिक विश्लेषक डॉ. वेद प्रताप वैदिक ने भी इस विषय पर प्रकाश डाला, इस दौरान मैं भारत हूँ फाउंडेशन के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष डॉ. गोविंद माहेश्वरी कोटा, महामंत्री शोभा सादानी कोलकाता, कोषाध्यक्ष निशा लड्ढा सफलतम मंच संचालिका कोलकाता, विदेश संयोजक अरूण मुंधड़ा, राजस्थान प्रदेश संयोजक श्रेयांस बैद, उपाध्यक्ष चेन्नई से सज्जनराज मेहता, जोधपुर से जयप्रकाश शर्मा के अथक प्रयास से कार्यक्रम को सफल बनाया जा सका। विशेष सहयोग दिल्ली तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठीया, कन्हैयालाल पटवारी (के.एल. जैन) व सुशिला भीकमचंद पुगलिया कोलकाता, रामेश्वर लाल काबरा मुंबई, संजय जोधराज लड्ढा कोलकाता, सतीश काबरा कोलकाता, दिल्ली निवासी प्रसिद्ध समाजसेवी अवधेश गुप्ता व ध्रुव फाउंडेशन के ट्रस्टी ध्रुव अग्रवाल का भी विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में महंत स्वामी श्री समानंद गिरि जी, भाजपा विधायक अजय महावर व अभय वर्मा, राष्ट्रवादी कांग्रेसी नेता योगानंद शास्त्री के साथ भारी संख्या में भारतीय गणमान्य उपस्थित थे।

- मैंभाहूँ

भारत की मानसिक उन्नति भली-भाँति तभी हो सकती है, जय शिक्षा का माध्यम 'हिन्दी' हो - पं. रामनारायण मिश्र

फिल्मी जीवन की पहचान अकोला के सिनेमाघर

- रमेश तोरावत जैन

अकोला: फिल्मों का शौकीन है अकोला, फिल्में भर-भर कर व्यापार करती हैं, फिल्मों के प्रति जुनून और दीवानगी जो अकोला वासियों में है उसके उदाहरण कम ही हैं, मगर अब हालात बदले हैं, सिनेमा अब अकेला होने लगा है, सिनेमाघरों से भिड़ छंटने लगी है, सिनेमाघरों के बाहर जो मेले लगते थे वे अब नजर नहीं आते, टिकटों की काला बाजारी इतिहास में जमा हो गयी है, हाउसफुल के बोर्ड सालों से न जाने कहा धूल खाते पड़े हैं, उन्हें अब कोई निकालता नहीं, उसकी जरूरत नहीं पड़ती, जनता ने मनोरंजन के मन्दिरों से मुख फेर लिया है।

एक जमाने में अकोला में मनोरंजन के मंदिर बहुत थे और सभी छविगृह हमेशा ठसाठस भरे रहते थे। सिनेमाघरों के आसपास एक अलग तरह का ही तिलस्म बंधा सा रहता था, राह चलते व्यक्ति को सिनेमाघर के सामने रुकना अनिवार्य था, आगामी आकर्षण के बोर्ड देख कर खोमचे वालों से उन फिल्मों पर पांच-सात मिनिट की चर्चा जरूरी थी। फ़िल्म के मध्यांतर में गाड़ी वाले, खोमचे वाले इस टॉकीज से उस टॉकीज की ओर दौड़ा करते थे। जीवन के जरूरी मसलों में सिनेमा हावी रहता था। घर के बच्चे भले ही पढ़े न पढ़े मगर 'मेरा नाम जोकर' देख कर ऋषि कपूर की पढ़ाई की चिंता करते थे कि देख लेना यह अब आगे नही पढ़ेगा। सिनेमाघर तो बहुत थे अकोला में, आज भी हैं, कुछ के नाम बदल दिए गए हैं, कुछ जमींदस्त कर दिए गए हैं, कुछ अवसान की स्थिति में हैं।

आज के समय में अकोला में 'मानेक' सिनेमा अपनी ऊंचाइयों को बरकरार रखे हुए है, देश के शीर्ष फिल्मकारों की फिल्में 'मानेक' टॉकीज में दिखायी

जाती है। शोले के इतिहास रचने में 'मानेक' सिनेमा का भी योगदान है। माँ के साथ लेडीज क्लास में मैंने 'रोटी कपड़ा और मकान' मानेक में ही देखी थी, वसंत सिनेमा भी बहुत बढ़िया है और सुपर सितारों से सजी फिल्में यहां लगती रहती हैं, आगे बढ़ने से पहले बता दूं कि वसंत सिनेमा से हमारा गहरा नाता रहा है, इसी में बाबूजी का होटल था और बाबूजी ने मुझे बताया था कि महान फिल्मकार स्व. पृथ्वीराज कपूर जी एक फ़िल्म के रिलीज पर अकोला आये थे और बाबूजी की होटल में उनके साथ चाय पी थी, यह वसंत टॉकीज पहले सरोज टॉकीज के नाम से जाना जाता था, बाद में इसका नाम और बदला और यह सरोज से श्री टॉकीज बन गया, और फिर श्री से वसंत, वसंत टॉकीज के इर्दगिर्द के कई किस्से आज भी लोगों की जुबां पर हैं, बुलंदियों को हासिल कई लोगों का वंसत सिनेमा से रिश्ता रहा है।

चित्रा टॉकीज सिटी कोतवाली के पास में था, मतलब अब वह नहीं है, वहॉ पर अब बहुत बड़ा मॉल बन गया है, उस मॉल में भी सिनेमाघर बनेगा, ऐसी जानकारी मुझे है मगर अभी वह निर्माणधीन है। चित्रा टॉकीज में महानायक अमिताभ बच्चन की 'नमक हराम' और 'सिलसिला' खूब चली, इसी सिनेमाघर में नागिन फ़िल्म ने खूब धूम मचाई थी। सुनील दत्त अभिनीत नागिन भी इसी चलचित्र में लगी थी, 'तेरे संग प्यार में नहीं' यह गीत मेरे कानों में आज भी उसी ताजगी के साथ गुंजायमान है जितना कि जब यह फ़िल्म रिलीज हुई थी। चित्रा टॉकीज पर भी खूब भीड़ जमा होती थी और हमेशा उत्सव के हालात देखे जा सकते थे।

रीगल सिनेमा भी अपने आप में बहुत मायने रखता है। रीगल का पुराना नाम श्री कृष्ण सिनेमा था। अकोला में पहली बार कोई सिनेमा नो शो में लगा तो उसका गौरव रीगल टॉकीज को जाता है।

आज बस स्टेशन के पास जो निशांत टॉवर है वहां पर भी कभी किसी दौर में सिनेमाघर हुआ करता था। सेंट्रल टॉकीज के नाम से वह सिनेमाघर जाना जाता था, यह सेंट्रल टॉकीज १९४२ में बना था और १९६० के आसपास यह बंद हो गया, इस सिनेमाघर में उस दौर की सुपरहिट फिल्में लगती थी। अशोक कुमार की 'झूला' इसी में लगी थी और विदेशों में बनी फिल्म सुपरमैन भी यहीं लगी थी, मराठी फिल्मों के कलाकारों का इस सिनेमाघर में बहुत अधिक आना जाना था।

शालिनी टॉकीज अभी बंद है मगर वह है, सिनेमा नहीं लगते हैं मगर वह विद्यमान है, अकोला के मध्य में सिटी कोतवाली के सामने यह सम्भवतः सब से पुराना सिनेमाघर है। सिनेमा के चलन से भी पहले यह मौजूद था, तब यह श्रीराम थियेटर के नाम से जाना जाता था। बड़े-बड़े दिग्गज रंगमंच के कलाकारों द्वारा यहाँ नाटक पेश किए जाते थे। सोहराब मोदी और पृथ्वीराज कपूर जैसे कलाकारों ने इस रंगमंच पर अपने नाटक खेले हैं।

राजकमल सिनेमा तो मेरे सामने ही बना और मेरे सामने ही जमींदोज हो गया। राजकमल बहुत ही लंबा सिनेमाघर था, अकोला के सभी सिनेमाघरों की बॉलकनी ऊपर थी, उपर है मगर राजकमल सिनेमा इस मामले में अपवाद ही रहा, यहाँ बॉलकनी भी नीचे ही थी, बनावट इसकी बॉलकनी से पर्दे की ओर एक रपटे की जैसी थी, जिससे अधिक पैसे देने वालों को ऊपर बैठने का ही अहसास होता था। अमिताभ जी की शहंशाह इसी सिनेमाघर में लगी थी।

मनोरंजन के बढ़ते हुये साधनों ने सिनेमा और सिनेमाघरों का कत्ल सा कर दिया है, पूरी फिल्म की टिकट ले कर एक गीत सुन व देख कर सिनेमाघर से निकल जाने वाली मौजु मंडली अब कहीं दिखाई नहीं पड़ती। फ़िल्म के मध्यांतर में गेट पास बेचने-खरीदने वाली टोली लुप्तप्राय है। मेरे नानाजी ने गेट पास बेचा था, यह बहुत पुरानी बात है, तब मैं बहुत छोटा और उन्हीं दिनों मानेक सिनेमा में कुमार गौरव की 'लव स्टोरी' फ़िल्म लगी थी। फ़िल्म बहुत प्यारी थी और उसके गीतों ने खूब धूम मचाई थी।

न्यू प्लाजा टॉकीज ओर श्याम टॉकीज आमने-सामने **शेष पृष्ठ १० पर...**

पृष्ठ ९ से... ही था। न्यू प्लाजा का नाम बदला गया और वह 'सरावगी' टॉकीज के नाम से जाने जाना लगा। श्याम सिनेमा का भी नाम बदला और अब 'उदय' थियेटर है। कालांतर में सरावगी सिनेमा बंद हो गया और वहां पर अभी बहुत बड़ा मार्किट बन गया है। न्यू प्लाजा में मैं बचपन में राजश्री की 'तपस्या' फ़िल्म देखी थी।

'राधा कृष्ण' टॉकीज जब शुरू हुआ तो जनता में बेहद खुशी थी। 'अकोला' में एक साथ दो सिनेमाघरों का यह पहला प्रयोग था। सिनेमा के शौकीन इस थियेटर में भी खूब आते थे, मगर यह सिनेमा अनवरत शुरू नहीं, कभी बंद होता है तो कभी शुरू होता है, अभी यह फिर नये नाम से पहचाना जा रहा है, नया नाम 'मिराज' सिनेमा, इसके अलावा इसी के पास एक छोटा सा सिनेमाघर अभी नया-नया शुरू हुआ है, 'छोटू महाराज' सिनेमा, यह आम सिनेमा सा नहीं बल्कि एक छोटा पारिवारिक मूवी थियेटर है, जो मनचाहा सिनेमा लगाता है और खाने-पीने को भी देता है, यानी कि आप खाते-पीते परिवार के साथ फ़िल्म का लुत्फ उठा सकते हो, मगर अभी यह बहुत अधिक चलन में नहीं है और न ही इस बारे में लोगों को कुछ अधिक जानकारी है, जिन दिनों हम आये थे और होटल वालों ने उन पर फिल्में दिखा कर अपने मिष्ठान बेचे थे, उसी तर्ज पर मुझे यह 'छोटू महाराज' सिनेमा लगता है।

अकोला के उमरी में एक 'टूरिंग' टॉकीज भी हुआ करता था, इस टूरिंग टॉकीज का नाम 'पुष्पा' टॉकीज था। बताया जाता है कि इसकी छत नहीं थी और रात को ही इसके शो हुआ करते थे। चादर चटाई पर दर्शक बैठते थे। कुर्सियां बहुधा इसलिए भी नहीं रखी जाती थी कि चालू सिनेमा में दर्शक इसे उछाल दिया करते थे। छोटे-मोटे झगड़े आम थे और सुरीले गीतों पर ताल मिलाना दर्शकों का शगल था। टूरिंग टॉकीज में मैने भी कई सिनेमा देखे हैं। टूरिंग टॉकीज में सिनेमा देखने का एक अलग ही मजा आता है। दिन के शो में फ़टे हुए टेंट से धूप छन-छन कर अंदर आती है। रोशनी ओर अंधेरे का अनोखा संगम टूरिंग टॉकीज में देखा जा सकता है।

सिनेमाघरों की चर्चा में नाट्य मंदिर की चर्चा भी जरूरी है। अकोला का 'प्रमिला ताई ओक हॉल' कलाकारों के लिए किसी मंदिर से कम नहीं है। मराठी नाटकों के सभी शीर्ष अभिनेताओं ओर अभिनेत्रियों ने यहाँ अपनी कला के जौहर दिखाये हैं। हिंदी फिल्मों के कई चरित्र अभिनेता भी यहां आते रहते हैं। यहाँ गीत-संगीत के गजब का कार्यक्रम होते हैं। 'लावणी' की प्रस्तुति होती है और ऑर्केस्ट्रा भी खूब होते हैं। कभी-कभार कवि सम्मेलन भी होते हैं, इसी के पास ओपन थियटर भी है, यह सरकारी है और चारों तरफ से खुला है, इसलिए इसे ओपन थियेटर कहते हैं, वैसे इसका नाम बाबा साहेब अंबेडकर नाट्य गृह है, बचपन में मैं पहली बार प्रसिद्ध खलनायक रजा मुराद से यहीं मिला था, तब भी वे पहचान रखते थे मगर जितने नामचीन आज हैं, तब शायद नहीं थे क्योंकि मुझे उनसे मिलने में कोई परेशानी नहीं हुयी, उनके साथ उस समय के सी ग्रेड फिल्मों के हीरो जावेद खान भी थे और जावेद खान से लोगबाग आटोग्राफ ले रहे थे। रजा मुराद जी और जावेद खान जी के साथ मेरी ब्लेक ऐंड व्हाइट तस्वीर आज भी है, हांलाकि यह तस्वीर सिर्फ मेरे लिए नहीं खींची गयी थी, बल्कि कुछ अन्य लोगों के लिये खींची जा रही थी, मैं भी इस मौके को गवाना नहीं चाहता था, सो मैं भी उनके साथ हो लिया, बाद में मैंने फोटोग्राफर को अधिक पैसे दे कर वह तस्वीर हासिल की। सिनेमा का उन्माद सच में इंसान से क्या-क्या करवाता है, मगर मुकाम सभी को हासिल नहीं होता, सुंदर सिनेमा का अंग जो बने हैं वे सब इसके विभत्स रूप को

जानते हैं। उनकी कड़ी मेहनत और लगन और उनकी कला से वे आज हमारे दिलों दिमाग पर छाये हुये है, संघर्ष करने वाले लोगों की भी कोई कमी नहीं है जो कि आज भी पहचान को तरस रहे हैं, अपनी पूरी जिंदगी सिनेमा में खफा कर भी नाम तो नहीं ही कमाया, दो समय की रोटी के लिये भी मोहताज हैं। 'अकोला' के सिनेमाघर हमारी दिनचर्या के हिस्सा हुआ करते थे, पहले दिन-पहले शो देखने की सभी की इच्छा रहती थी, जो देख आता उसे ईर्ष्या की नजर से देखा जाता था कि देखो कितना नसीब वाला है, पहला दिन-पहला शो देख आया है। गांव से आने वाले मेहमानों को सिनेमा अवश्य दिखाया जाता था, बहुधा मेहमान भी इन्हीं भावनाओं को जीते हुये आते थे कि 'अकोला' जा रहे हैं तो दो-चार सिनेमा तो देखेंगे ही। मेहमान भी आते थे तो आठ दस दिन तो रहते ही थे, एक दो सिनेमा तो मेजबान दिखा ही देता था और समय खाली रहा तो मेहमान भी स्वयं ही अकेले देख आता था। हमारे यहाँ आने वाले मेहमानों को मैं सिनेमाघर का रास्ता बताने जाता था, कभी-कभी मेहमान कहता कि तू भी देख ले न पिक्चर, तो मैं तुरंत हामी भर देता था, ऊपरी खुशी दिखाते हुये ओर मन ही मन भुनभुनाते हुये मेहमान मुझे सिनेमा दिखाता था, उसकी भुनभुनाहट की वजह होती थी मेरे पास पैसे नहीं होना, एक छोटे से बच्चे के पास भला कितने पैसे हो सकते थे, पांच पैसे या दस पैसे। जाते समय कभी कोई मेहमान खुश हो कर रुपया दो रुपया दे भी देता तो माँ वह ले कर पांच पैसे हाथ में थमा देती थी, बड़ा ही प्यारा समय था वह, बड़ा ही गज़ब का वह दौर था, स्कूल के बीच की छुट्टी रोटी खाने के लिये हुआ करती थी और मैं उस का सदुपयोग चित्रा, शालिनी, न्यू प्लाझा, श्याम और मानेक सिनेमा जा कर फिल्मों के पोस्टर बड़ी हसरतों से देखता था और फिर दौड़ता फलांगता वापस समय पर स्कूल आ जाता, सिनेमा देखने की इतनी दीवानगी के बावजूद भी मैंने कभी भी कोई पीरियड मिस कर सिनेमा नहीं देखा, सिनेमा के बारे में मेरा अदभुत ज्ञान, रुचि देख बहुधा लोग घर पर आकर यही कहते थे कि इस पर नजर रखो, यह स्कूल जाता भी है या नहीं..

- रमेश तोरावत जैन
अकोला
मो. ९०२८३७१४३६

सहयोगी लेखन में श्री बाजीराव वझे, घनश्याम अग्रवाल, प्रकाश पोहरे, कृष्णकांत शर्मा, संजय इंगले, शर्माजी (तेलंगाना) का साथ मिला है।

एक भाषा की वजह से एकता को सफलता मिल सकती है, वह हिन्दी ही है - बिजय कुमार जैन

महाराष्ट्र का एक जिला 'अकोला'

'अकोला' नागपुर और अमरावती के बाद विदर्भ का तीसरा सबसे बड़ा शहर और महाराष्ट्र का दसवां सबसे बड़ा शहर है। राज्य की राजधानी मुंबई से लगभग ५८० किलोमीटर (३६० मील) पूर्व और दूसरी राजधानी नागपुर के २५० किलोमीटर (१६० मील) पश्चिम में स्थित है। 'अकोला' अमरावती मंडल में स्थित 'अकोला' जिले का प्रशासनिक मुख्यालय है और 'अकोला' नगर निगम द्वारा शासित है।

'अकोला' महाराष्ट्र राज्य, पश्चिमी भारत के उत्तर-मध्य में मोरना नदी के तट पर स्थित है। हालांकि इसे एक आम पर्यटन स्थल नहीं माना जाता, लेकिन 'अकोला' अपने इतिहास, संस्कृति, राजनीति और कृषि के कारण एक महत्वपूर्ण शहर है। ताप्ती नदी घाटी में इसका एक प्रमुख सड़क और रेल जंक्शन भी है जो एक वाणिज्यिक व्यापार केंद्र के रूप में कार्य करता है।

अकोला संत गाडगे बाबा अमरावती विश्वविद्यालय से संबद्ध कई कॉलेजों के साथ एक महत्वपूर्ण शैक्षणिक केंद्र है। शहर एक बाजार केंद्र के रूप में विकसित हो रहा है। 'अकोला' के लोगों द्वारा बोली जाने वाली प्राथमिक भाषा मराठी है। यह कपास उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है।

इतिहास

प्रारंभिक मध्ययुगीन इतिहास (शास्त्रीय)

'अकोला' को बरार प्रांत का एक हिस्सा और संस्कृत महाकाव्य महाभारत में विदर्भ के पौराणिक साम्राज्य का उल्लेख किया गया है। सातवाहन राजवंश (दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व - दूसरी शताब्दी सीई) वाकाटक वंश (तीसरी से छठी शताब्दी), चालुक्य वंश द्वारा शासित होने से पहले, बरार ने अशोक (२७२ से २३१ ईसा पूर्व) के शासनकाल के दौरान मौर्य साम्राज्य का हिस्सा भी बनाया (६वीं से ८वीं शताब्दी)। राष्ट्रकूट वंश (८वीं से १०वीं शताब्दी), चालुक्य वंश (१०वीं से १२वीं शताब्दी) और देवगिरी के यादव वंश (१२वीं से १४वीं शताब्दी के अंत तक)।

मध्यकालीन इतिहास

मुस्लिम शासन की अवधि शुरू हुई जब दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने १४ वीं शताब्दी की शुरुआत में इस क्षेत्र पर विजय प्राप्त की। यह क्षेत्र बहमनी सल्तनत का हिस्सा था, जो १४वीं शताब्दी के मध्य में दिल्ली सल्तनत से अलग हो गया था। १५ वीं शताब्दी के अंत में बहमनी सल्तनत खुद छोटे सल्तनत में टूट गया **शेष पृष्ठ १२ पर...**

पृष्ठ ११ से ... और १५७२ में बरार अहमदनगर में स्थित निज़ाम शाही सल्तनत का हिस्सा बन गया। निज़ाम शाहियों ने १५९५ में बरार को मुगल साम्राज्य को सौंप दिया और मुगलों ने १७वीं शताब्दी के दौरान बरार प्रांत पर शासन किया। मुगल राजा औरंगजेब के शासन के दौरान अकोला किला भारी रूप से मजबूत किया गया था, जैसे ही १८ वीं शताब्दी की शुरुआत में मुगल शासन का पता लगाना शुरू हुआ, हैदराबाद के निजाम आसिफ जाह प्रथम ने १७२४ में साम्राज्य के दक्षिणी प्रांतों (बरार सहित) को एक स्वतंत्र राज्य बनाने के लिए जब्त कर लिया।

मराठा साम्राज्य

यह क्षेत्र छत्रपति शिवाजी महाराज के शासन में आया और बाद में उनके पुत्र मराठा साम्राज्य के रूप में १६७४ से १७६० तक बढ़ गए, जब १७४९ में छत्रपति शाहू महाराज प्रथम की मृत्यु हुई, तो उन्होंने कुछ शर्तों के साथ पेशवा को मराठा साम्राज्य का प्रमुख नियुक्त किया। १७६१ में पानीपत की तीसरी लड़ाई ने मराठा साम्राज्य को पंगु बना दिया और पेशवा की शक्ति को कमजोर कर दिया, लेकिन बरार मराठा शासन के अधीन रहा। १८०३ में अरगाँव की लड़ाई दूसरे आंग्ल-मराठा युद्ध के दौरान अकोला में अंग्रेजों और मराठों के बीच लड़ी गई थी। तीसरे आंग्ल-मराठा युद्ध में अंतिम पेशवा बाजीराव द्वितीय की हार हुई। १८५३ में, अकोला जिला शेष बरार के साथ ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रशासन के अधीन आ गया। बरार को पूर्व और पश्चिम बरार में विभाजित किया गया था जिसमें अकोला जिले को पश्चिम में शामिल किया गया था। १९०३ में, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा कर्ज के बदले बरार को हैदराबाद के निजाम को पट्टे पर दिया गया था।

आजादी के बाद

१९४७ में ब्रिटिश सरकार से भारत की स्वतंत्रता के बाद नवगठित देश को विभिन्न राज्यों में विभाजित किया गया था। भारत की स्वतंत्रता से पहले कांग्रेस की प्रस्तावित भाषाई प्रांतों की योजना ने 'अकोला' को बरार क्षेत्र के मुख्यालय के रूप में स्थान दिया था।

१९५६ में भारत के राज्यों और प्रांतों का पुनर्गठन किया गया, 'अकोला' जिला पहले मध्य प्रदेश का हिस्सा बना, बाद में इसे बॉम्बे राज्य में स्थानांतरित कर दिया गया, अंततः १९६० में महाराष्ट्र राज्य का एक हिस्सा बना। 'अकोला' जिले को दो बार विभाजित किया गया था- १ जुलाई १९९८ को अकोला और वाशिम। अकोला, बालापुर, पतूर, बरशीतकली, मुर्तिजापुर, अकोट और तेलहारा तालुका अब तक अकोला जिले का गठन करते हैं। जिला मुख्यालय 'अकोला' में स्थित है।

राज राजेश्वर मंदिर अकोला

अकोला के सबसे पुराने मंदिरों में से एक राजेश्वर मंदिर, जिसे राजेश्वर नगरी के नाम से भी जाना जाता है, प्रसिद्ध 'अकोला' किले में स्थित है। मंदिर में थोड़ी सी दरार है। दरार के पीछे का कारण एक कहानी है, जो राजा अकोला सिंह के शासनकाल के दौरान हुई थी।

कहा जाता है कि राजा अकोला सिंह की पत्नी अवैध कारणों से आधी रात को बाहर जाती थी, एक दिन राजा अकोला सिंह ने उसका पीछा किया। राजा को पीछा करते देख वह सीधे एक शिव मंदिर में गई और भगवान से विनती की, कि उसका पति उसके प्रति आस्था और निष्ठा नहीं रख रहा है, फिर उसने भगवान शिव से उसे एक लिंगम में बदलने का अनुरोध किया। बाद में लिंगम दो भागों में टूट गया और वह उसमें कूद गई। सभी क्षेत्रों के लोग सोमवार के दौरान मंदिर में आते हैं क्योंकि इसे शुभ माना जाता है।

अद्वितीय जैन तीर्थ
श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ–शिरपूर

जैन धर्म में २३वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ की भव्य चमत्कारी प्रतिमा का इतिहास बहुत ही प्राचीन है। श्वेताम्बर मान्यतानुसार कहा जाता है राजा रावण के बहनोई पाताल लंका के राजा खरदूषण के सेवक माली व् सुमाली ने पूजा निमित्त इस प्रतिमा का निर्माण बालू व् गोबर से किया था, जाते समय प्रतिमाजी को नजदीक के जलकुंड में विसर्जित कर दिया। शताब्दियों तक प्रतिमा जलकुंड में अदृश्य रही, जो की विक्रम सं. ११४२ में चमत्कारिक घटनाओं के साथ पुन: प्रकट हुई। तत्पश्चात् श्री भावविजयजी गणि के सदुपदेश से मंदिर का जीर्णोद्धार करवाकर उन्हीं के सुहस्ते विक्रम सं. १७१५ चैत्र शुक्ल ५ के दिन शुभ मुहूर्त में प्रतिष्ठा पुन: संपन्न हुई।

राजसेवक माली और सुमाली असावधानी से पूजा के लिए प्रतिमा लाना भूल गए थे, इसलिए पूजा के निमित्त यहाँ पर इस स्थान से वापस जाते समय नजदीक के जलकुण्ड में विसर्जित किया। प्रतिमा शताब्दियों तक जलकुण्ड में अदृश्य रही, समयान्तर में इस कुण्ड के जल का उपयोग करने पर एलीचपुर के राजा श्रीपाल का कुष्टरोग निवारण हुआ, इस आश्चर्यमयी घटना पर विचार विमग्न चिंतन करते समय राजरानी को स्वप्न में यह दृश्य दिखाई दिया कि इस जलकुण्ड में श्री पार्श्वप्रभु की प्राचीन व् चमत्कारिक प्रतिमा विराजमान करके खुद सारथी बनकर, मनचाहे निशंक मन से ले जा सकता है। शंका करना नहीं व न पीछे मुड़कर देखना।

राजा ने प्रतिमाजी को विशाल जनसमूह के बीच धूमधाम के साथ वैसे ही वाहन पर रखकर उसे एलिचपुर ले जाने का उपक्रम किया, वाहन के साथ प्रतिमा चली, पर बीच में राजा के मन में शंका हुई कि इतनी बड़ी प्रतिमा गाड़ी के साथ आती है या नहीं, इसलिए उसने शांत ह्रदय से पीछे मुड़कर देखा तो प्रतिमाजी उसी जगह पर एक पेड़ के नीचे आकाश में अधर में स्थिर हो गई। कहा जाता है कि उस समय इस प्रतिमाजी के नीचे से घुड़सवार निकल जाये, इतनी अधर की ऊंचाई थी।

राजा इस चमत्कारिक घटना से प्रभावित हुआ। वहीं पर एक भव्य मंदिर का निर्माण करवाया और उस मंदिर में प्रभु को प्रतिष्ठित करवाना चाहा। प्रतिष्ठा के समय राजा के मन में अहंकार आने के कारण, लाख कोशिश करने पर भी प्रतिमा अपने स्थान से नहीं हिली। मंदिर सूना का सूना ही रहा, जो आज भी 'पावली मंदिर' के नाम से प्रसिद्ध है, जिस पेड़ के नीचे प्रतिमा स्थिर हुई थी, वह भी मंदिर के नजदीक ही स्थित है। प्रतिष्ठा के समय उपस्थित आचार्य श्री अभयदेवसूरीश्वर् जी के उपदेश से श्री संघ ने गाँव के बीच एक दूसरा विशाल संघ मंदिर बनवाया और राजा के सान्निध्य में संघ मंदिर में प्रतिष्ठा करवाने का निर्णय लेने पर प्रतिमाजी का संघ मंदिर में आगमन हुआ और बड़े उत्साह व् मंगलध्वनि के साथ प्रतिष्ठा संपन्न हुई।

वि.सं. १७१५ में श्री भावविजयगणीजी को प्रभु दर्शन की अभिलाषा होने पर अंतरिक्षजी आए व दर्शन भाव से प्रभु दर्शन करने पर आँखों की गई रोशनी फिर से आई, अंधापा दूर हुआ। उन्होंने यहाँ रहकर जीर्णोद्धार करवाया व सं १७१५ चैत्र शुक्ल ५ को पुन: प्रतिष्ठा करवाई। उस समय प्रतिमाजी जमीन से एक अंगुल प्रमाण अधर रही, जो अभी भी यथावत है, लेकिन वर्तमान में काल के प्रभाव से बायें किनारे पर बिन्दुमात्र भाग का स्पर्श हुआ नजर आता है।

चमत्कार :- श्री भाव विजयजी गणीजी को आँख का भयंकर रोग था। विजयदेवसूरीजी की सूचना से उन्होंने पद्मावती मंत्र की आराधना की। पद्मावती देवी ने अंतरिक्ष पार्श्वनाथ प्रभु का इतिहास व महत्त्व समझाया। पू. भावविजयजी गणी संघ सहित अंतरिक्षजी पधारे, उन्होंने प्रभु की भावपूर्वक भक्ति की, उस भक्ति के प्रभाव से उनका अंधत्व दूर हो गया, उनके नेत्रपटल खुल गए। यह रोमांचक घटना वि.सं १७१५ में बनी, मंदिर का पुन: जीर्णोद्धार हुआ और १७१७ चैत्र सूद ५ को पुन: प्रतिष्ठा हुई, इस स्थान के दर्शन भाव सहित होने से अपनी मनोकामना पूरी कर सकते हैं।

ऐतिहासिक नगरी अकोला के प्रकाशन पर 'मैं भारत हूँ' परिवार को हार्दिक धन्यवाद

Gopalkrishna Shantilal Bhala
Mob : 9423128386

● Gaurav Bhala ● Shreyas Bhala

JODHA UDYOG
&
BHALA UDYOG

MANUFACTURER OF QUALITY PULSES

Factory : Plot No, H-61-62, M.I.D.C. III, Akola, Maharashtra, Bharat - 444104 Factory Phone : 0724 - 2258395

अकोला का किला असदगढ़

बाह्य भाग

'अकोला' में प्रसिद्ध स्थानों के बीच पुराने शहर में स्थित असदगढ़ या अकोला किला के सबसे अच्छे पर्यटन स्थलों में से एक है। 'अकोला' में देखने के लिए ५ सर्वश्रेष्ठ स्थानों में से यह किला सभी इतिहास प्रेमियों को दर्शनीय स्थलों की यात्रा के लिए एक विशेष है।

असद खान द्वारा १६९७ में निर्मित, यह विशाल ग्रेनाइट पत्थर के ब्लॉक, मोर्टार, ईंट और लकड़ी से बने आकर्षणों में से एक है। 'अकोला' के पास घूमने के लिए कई जगहों में से यह किला सबसे अच्छे दर्शनीय स्थलों में से एक है। 'अकोला' में लोकप्रिय घूमने वाले स्थानों की आपकी खोज तब समाप्त हो जाती है जब आप इस किले को शीर्ष दर्शनीय स्थलों में से एक के रूप में चुनते हैं। दूसरे एंग्लो-मराठा युद्ध के दौरान आर्थर वेलेस्ली द्वारा कैंपिंग ग्राउंड के रूप में इस्तेमाल किया गया, यह किला शीर्ष 'अकोला' पर्यटक आकर्षण स्थानों में से एक है।

आंतरिक भाग

अकोला का किला

गाँव की रक्षा के लिए अकोल सिंह ने एक खरगोश को कुत्ते का पीछा करते हुए देखा और इसे शुभ संकेत मानकर उसने गांव की रक्षा के लिए मिट्टी की दीवार खड़ी कर दी। 'अकोला' को १६९७ सीई में औरंगजेब के शासनकाल के दौरान असद खान द्वारा प्रमुख रूप से मजबूत किया गया और किले का नाम 'असदगढ़' रखा गया।

१८०३ में आर्थर वेलेस्ली ने दूसरे आंग्ल-मराठा युद्ध में अरगांव की लड़ाई जीतने के लिए आगे बढ़ने से पहले यहां डेरा डाला था। किले को लगभग १८७० में ब्रिटिश राज द्वारा ध्वस्त कर दिया गया। १९१० में एक जिला गेजेटियर में यह बताया कि किले के मध्य भाग (हवाखाना) का उपयोग स्कूल के रूप में किया जाता था।

'अकोला' किले को असदगढ़ किला या असगड़ किला भी कहा जाता है। यह सबसे पुराने मिट्टी के किले में से एक है, इसे अकोल सिंह ने बनाया था, १६९७ सीई के दौरान असद खान द्वारा औरंगजेब का शासन था। किले के दो रास्ते हैं, पहला किले की उत्तरी दीवार के साथ चलने वाली एक पूर्व पश्चिम सीढ़ी का, दूसरा आवासीय क्षेत्र के माध्यम से उत्तर से दक्षिण की ओर जाने वाला एक उचित रूप से निर्मित दृष्टिकोण पथ और सीढ़ी का...

निज़ाम शाहियों ने १५९५ में बरार को मुगल साम्राज्य को सौंप दिया। मुगलों ने १७वीं शताब्दी के दौरान बरार प्रांत पर शासन किया, जैसे ही १८ वीं शताब्दी की शुरुआत में मुगल शासन का शासन शुरू हुआ, हैदराबाद के निजाम आसफ जाह ने १७२४ में साम्राज्य के दक्षिणी प्रांतों (बरार सहित) को एक स्वतंत्र राज्य बनाने के लिए जब्त कर लिया। १७वीं शताब्दी के दौरान बरार प्रांत पर मुगलों का शासन था। जैसे ही १८ वीं शताब्दी की शुरुआत में मुगल शासन का शासन शुरू हुआ, हैदराबाद के निजाम आसफ जाह ने १७२४ में साम्राज्य के दक्षिणी प्रांतों (बरार सहित) को एक स्वतंत्र राज्य बनाने के लिए जब्त कर लिया।

वर्ष १८०३ में, दूसरे आंग्ल-मराठा युद्ध के दौरान, किला आर्थर वेलेस्ली का शिविर स्थल बन गया। बाद में १८७० में अंग्रेजों ने किले को नष्ट कर दिया और इसे खंडहर बना दिया। अकोला किला परिसर की यात्रा पर पर्यटक राजेश्वर मंदिर भी जा सकते हैं, जो इस क्षेत्र के सबसे पुराने शिव मंदिर में से एक है, इसके अलावा किले के परिसर में कई पत्थर की संरचनाएं हैं, जिन्हें बाद के समय में इसके लगातार रहने वालों द्वारा बनाया गया था।

- किलों की उत्पत्ति सातवाहन काल के दौरान हुई थी।
- शिवाजी महाराज द्वारा निर्मित किलों के प्रत्येक प्रवेश द्वार पर एक 'कलश' है और उस पर भगवान गणेश उत्कीर्ण हैं। पास के नानेघाटा (टोल संग्रह केंद्र) का उपयोग व्यापारियों द्वारा व्यावसायिक कार्यों के लिए किया जाता था।
- चूंकि यह एक महत्वपूर्ण दर्रा है जो समुद्र में मुख्य भूमि से जुड़ता है, यह दुश्मनों से अत्यधिक सुरक्षित है।
- जीवनदान किला विभिन्न राज्यों के हितों की रक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण सुरक्षात्मक किले के रूप में खड़ा था।

शेष पृष्ठ १५ पर...

पृष्ठ १४ से... ▶ अहमदनगर के आदिलशाही के अंतिम सम्राट छोटा मुर्तजा थे, मुगलों ने उन्हें जिवधान किले में बंदी बना लिया था। १६३५ में, छत्रपति शिवाजी महाराज के पिता शाहजी महाराज ने उन्हें जेल से रिहा कर दिया और उन्हें अहमदनगर का राजा घोषित कर दिया।

▶ जीवनधन से नानेघाट २-३ किमी का खुला मैदान है, जो दुश्मन के रुख का स्पष्ट संकेत देता है।

▶ १८१८ में किले पर अंग्रेजों ने कब्जा कर लिया और सभी सड़कों को नष्ट कर दिया गया।

▶ किले पर ईस्ट इंडिया कंपनी के कर्नल प्राथर ने कब्जा कर लिया था और बाद में इसे नष्ट कर दिया गया था।

▶ १८१५ और १८१८ के बीच किले को अंग्रेजों ने लूटा और नष्ट कर दिया था

आंतरिक भाग

अकोला किले की विशेषताएं

▶ किले में कुछ अनदेखे खजाने हैं जिन्हें उचित देखभाल के साथ खोजा जा सकता है, ऊपर देवी का मंदिर है, मेन गेट और कल्याण गेट अच्छी स्थिति में हैं।

▶ पानी की टंकियां – किले पर कुछ पानी की टंकियां हैं, स्टोर हाउस के पास की टंकियों का पानी पोर्टेबल नहीं है क्योंकि यह साल भर खुला रहता है। कल्याण गेट के पास का चट्टानी पानी पीने योग्य है। खाना बनाते या पीते समय इस पानी का प्रयोग सावधानी से करना चाहिए, पूरा किला लेपिडागाथिस कुस्पिदता की कुरकुरे झाड़ियों से ढका हुआ है या इसे मराठी में केट अदुलसा कहा जाता है। मालाबार जंगल में विशालकाय गिलहरी या 'शेखरू' के पैर में पाया जाता है।

▶ किले के पास की चोटी करीब ३८५ फीट ऊंची है, जब आप किले में जाते हैं, तो यह आकार में छोटा दिखता है, लेकिन जब आप किले के पास जाते हैं तो आप महसूस कर सकते हैं कि चोटी कितनी ऊंची है, इस चोटी को 'वंडरलिंगी' कहा जाता है। उचित रॉक क्लाइम्बिंग उपकरण के उपयोग के कारण यह अपरिहार्य है। शिखर तक पहुंचने में एक या दो दिन लग सकते हैं। पूर्ण नियंत्रण के साथ चढ़ने के लिए मधुमक्खियों के क्षेत्र का पता लगाना आवश्यक है।

▶ एक बार जब आप किले की चोटी पर पहुँच जाते हैं तो आपको आस-पास विभिन्न पहाड़ियाँ और किले दिखाई देंगे। आप हरिश्चंद्रगढ़, चावंड, रतनगढ़, नानेघाट, हुदसर किला, निमगिरी किला, मानिकदोह बांध और पूरे जुन्नार पठार जैसे किले स्पष्ट रूप से देख सकते हैं।

कटेपूर्णा बांध

भारत के महाराष्ट्र राज्य में 'अकोला' जिले के बरसी तकली के पास महान में स्थित कटेपूर्णा नदी पर एक मिट्टी का बांध है, यह अकोला शहर और आसपास के उपनगरों में पानी (जल) की सेवा प्रदान करता है।

विशेष विवरण

इसकी सबसे निचली नींव से बांध की ऊंचाई २९.५ मीटर (९७ फीट) है, जबकि लंबाई २,००० मीटर (६,६०० फीट) है। इसकी मात्रा ६९३,००० घन मीटर (२४,५००,००० घन फुट) है और इसकी सकल भंडारण क्षमता ९७,६७,००० घन मीटर (३.४४९×१०९ घन फुट) है।

भारत का प्रसिद्ध पर्यटन क्षेत्र 'अकोला' के प्रकाशन पर 'मैं भारत हूँ' परिवार की हार्दिक शुभकामनायें

C. M. Bhaiya
Mob. : 9922448229 / 8788219720

MAA
Plywood & Hardware
Plywood / Door / Hardware / Laminate
Shop No.-1, Dattaraj Plaza-1, Keshav Nagar square,
Opp. Swad Bekery, Ring Road, Akola, Maharashtra, Bharat-444004

अकोला में ऐतिहासिक इमारत सुंदराबाई खंडेलवाल टावर

सुंदराबाई खंडेलवाल टावर महान ऐतिहासिक स्मारक है, इसे शहर का मील का पत्थर माना जाता है और यह महाराष्ट्र के 'अकोला' जिले से १.५ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

यह एक प्रख्यात महिला सुंदराबाई की याद में बनाया गया था। यह १२ फरवरी १९४२ को निर्मित शहर के सबसे पुराने स्मारकों में से एक है, इसका उद्घाटन पूर्व स्वर्गीय प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा किया गया। इस प्रसिद्ध मीनार की आधारशिला का नेतृत्व सांसद श्री गोपालराव बाजीराव खेड़कर ने २ अक्टूबर १९६० को किया था। इस विशाल मीनार के निर्माण में प्रयुक्त कच्चा माल (पत्थर) जो शिरला की प्रसिद्ध खदान से लिया गया था। यह मीनार अपने ऐतिहासिक और स्थापत्य महत्व के लिए प्रसिद्ध है, इसका निर्माण खंडेलवाल परिवार ने सुंदराबाई खंडेलवाल की याद में करवाया गया था।

इस मीनार का ऐतिहासिक पहलू कई पर्यटकों का ध्यान आकर्षित करता है। यह कला और इतिहास प्रेमियों द्वारा देखी जाने वाली सबसे अच्छी जगहों में से एक है, इस ऊँचे मीनार के शीर्ष पर चारों ओर घड़ियाँ हैं। आगंतुक अपने परिवारों के साथ भी कुछ समय बिता सकते हैं और भारत के इतिहास और वास्तुकला से परिचित हो सकते हैं। इस टावर की वास्तुकला की यात्रा और प्रशंसा करने का एक आदर्श समय अक्टूबर से अप्रैल तक है।

श्री संत नरसिंह महाराज जी का मंदिर

यह मंदिर अकोट के महान संत श्री नरसिंह महाराज को समर्पित है। मंदिर टेकड़ी पुरा, अकोट में स्थित एक शहर 'अकोला' जिला है और 'अकोला' से लगभग ४७ किलोमीटर दूर है। यह जिले के सबसे पुराने मंदिरों में से एक है और भारत में नरसिंह महाराज का एकमात्र मंदिर है।

नरसिंह महाराज मंदिर में तीर्थयात्रियों के बैठने और तीन मेहराबों के साथ महान संत के नाम का जाप करने के लिए एक हॉल है, प्रत्येक तरफ एक मुख्य मंदिर के मध्य में नरसिंह महाराज की समाधि है, जिसके सामने विठ्ठल और रुक्मिणी के चित्र एक अलंकार पर रखे हैं। मंदिर के दक्षिण में मणिकर्णिका नाम का एक कुंआ है। पौराणिक कथा के अनुसार, नरसिंह महाराज पर त्रिवेणी संगम (वह स्थान जहाँ तीन देवी नदियाँ - गंगा, यमुना और सरस्वती मिलती हैं) से कुंए का पानी बरसता है। मंदिर के अलावा, नरसिंह महाराज के गुरु 'कुवत शाह अली' की एक दरगाह भी यहां मौजूद है। मंदिर का निर्माण १८८७ में पवित्र संत की मृत्यु से पहले मारोती गणेश असरकर द्वारा शुरू किया गया था। ऐसा माना जाता है कि नरसिंह महाराज पूरे दिन जंगल में घूमते थे और रात को अपनी झोपड़ी में आते थे यहीं वे मंत्र का जाप करते थे। श्री संत गजानन महाराज रात में भजन गाते थे और नरसिंह महाराज मधुर मंत्रोच्चार से लीन हो जाते थे। ऐसा कहा जाता है कि संत नरसिंह महाराज, गजानन महाराज यहाँ विश्राम करते थे और विभिन्न सामाजिक और धार्मिक चीजों, जीवन जीने के तरीकों के बारे में चर्चा करते थे।

उत्सव (यात्रा) जिसमें २०,००० या २५,००० लोग शामिल होते थे। कार्तिक (अक्टूबर-नवंबर) में महाराज की पुण्यतिथि पर किटसन लाइट शो की व्यवस्था के साथ आयोजित किया जाता है। यह यात्रा १५-२० दिनों के लिए आयोजित की जाती है और ज्यादातर सस्ते और विभिन्न प्रकार के टॉप, आभूषण और ऐसी कई वस्तुओं की दुकानों के लिए प्रसिद्ध है। 'रेवाड़ी' यात्रा में बिकने वाली सबसे प्रसिद्ध मिठाई है।

मंदिर में दर्शन सुबह ६:०० बजे से रात १०:०० बजे तक किया जा सकता है। मंदिर तक सभी परिवहन सुविधाएं उपलब्ध हैं। नरसिंह महाराज मंदिर को देखने के लिए लगभग आधा घंटा पर्याप्त है।

भारत के अकोला जिले का एक किला बालापुर

बालापुर किला भारत के 'अकोला' जिले के बालापुर शहर में एक मुगल किला है। किले पर निर्माण सम्राट औरंगजेब के पुत्र मिर्जा आज़म शाह द्वारा शुरू किया गया था और इसे १७५७ में एलीचपुर के नवाब इस्माइल खान द्वारा पूरा किया गया। राजा मान सिंह प्रथम की छतरी, मिर्जा राजा जयसिंह द्वारा निर्मित एक छतरी है। १०० साल से भी अधिक समय पहले हुई 'ध्वद्यपुर' नामक एक बाढ़ में इसकी नींव बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई थी, लेकिन कुछ वर्षों के बाद जयपुर से प्राप्त ३,००० रुपये की लागत से क्षति की मरम्मत की गई थी।

इतिहास

पुराने गजेटियर में कहा गया है छतरी के सभी हिस्सों पर अपना नाम लिखने के लिए लोग आते हैं, बीच में एक पत्थर को सर्वव्यापी पवित्र लाल रंग से रंगा गया है। १६१६ में शाह नवाज खान, बरार के सूबेदार, बालापुर में डेरा डाले हुए थे। पराजित मलिक अंबर ने हमला किया, लेकिन वह लंबे समय तक नहीं टिक सका और बालापुर को पीछे हटना पड़ा। औरंगजेब ने दिल्ली में शाही सिंहासन पर चढ़ने के बाद राजा जयसिंह को दक्कन का राज्यपाल नियुक्त किया, उसने राजा मान की छतरी का निर्माण किया। औरंगजेब के पुत्र मिर्जा आजम शाह के बारे में कहा जाता है कि वे यहां रहते थे और उन्होंने मिट्टी का किला बनाया था।

स्थान

बालापुर किला पश्चिम-मध्य भारत में मान और भैंस नदियों के जंक्शन पर स्थित एक बड़े शहर बालापुर में स्थित है।

पुराने गजेटियर में उल्लेख है कि कसरखेड़ा में १७३७ की एक मस्जिद थी, कहा गया है कि कासरखेड़ा की मस्जिद बाद की मुगल वास्तुकला का एक अच्छा नमूना है। मस्जिद को रौजा मस्जिद के रूप में जाना जाता है, क्योंकि इसमें एक स्थानीय संत मौलवी मासूम शाह की कब्र है। पुराने गजेटियर में यह भी कहा गया है, एक स्थानीय संत सैय्यद अमजद द्वारा कस्बे में एक अच्छी हवेली का निर्माण किया गया और मुख्य द्वार पर एक शिलालेख, मुगल वास्तुकला का एक नमूना यह जानकारी देता है कि इसे १७०३ में बनाया गया।

दो नदियों के बीच एक ऊंचे मैदान पर स्थित किले में बहुत ऊंची दीवारें और बुर्ज हैं जो अपने समय की सबसे अच्छी ईंटों से बने हैं। किले में तीन प्रवेश द्वार हैं।

मुगलों के समय में बालापुर को एक महत्वपूर्ण सैन्य स्टेशन के रूप में निर्मित किया गया, किले को भी शहर की सैन्य जिम्मेदारियों और स्थिति को ध्यान में रखते हुए बनाया गया था। किले में प्रयुक्त जटिल वास्तुकला ने इसकी सुरक्षा सुनिश्चित की।

बाला देवी का मंदिर, जिससे शहर का नाम पड़ा है, किले के ठीक नीचे, दक्षिणी तरफ स्थित है। अपेक्षाकृत अच्छी स्थिति में बालापुर किला अब सरकार द्वारा कार्यालयों के लिए उपयोग किया जाता है। एक शांत स्थान, इस किले का मुगलों के समय में सर्वोच्च महत्व था।

सभी संस्कृतियों का रंगमंच
'अकोला' में है अद्भूत संगम

किशोर लूणकरणजी मालाणी
Mob : 9923709777
गवर्नमेंट कांट्रेक्टर्स एंड बिल्डर्स
रामगिरी, बिरला लेआउट, वनसदा पेठ
अकोला, महाराष्ट्र, भारत- ४४४००१

बिरला राम मंदिर

अकोला शहर के केंद्र से ३ किमी से अधिक की दूरी पर स्थित बिड़ला राम मंदिर अकोला के सबसे प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है, इसे श्री राम मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। मंदिर अकोला रेलवे स्टेशन के बहुत करीब है और सताव चौक से पैदल दूरी पर है। यह बिड़ला परिवार के तत्कालीन मेसर्स बरार ऑयल इंडस्ट्रीज द्वारा निर्मित एक प्राचीन मंदिर है।

मंदिर परिसर अपने आप में बहुत ही शांत और सुंदर है। यहां दो मंदिर हैं। एक भगवान राम, देवी सीता और लक्ष्मण का है। मुख्य मंदिर के बगल में दूसरा मंदिर भगवान शिव का है। मंदिर अपनी सुंदर और आकर्षक वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है। एक छोटे से लॉन क्षेत्र में प्रवेश द्वार पर मंदिर के सामने भगवान शिव की एक मूर्ति भी रखी गई है। प्रवेश द्वार के शीर्ष पर भगवान कृष्ण की एक मूर्ति है, जिसके दोनों ओर दो गायें हैं। सभी मूर्तियों के निर्माण में शुद्ध सफेद संगमरमर का प्रयोग किया गया है। मंदिर के अंदर गीता जैसी पवित्र पुस्तकों की विभिन्नता और उद्धरण छोटे चित्रों के साथ अंकित हैं। वेदों और उपनिषदों से चुने गए प्रसिद्ध भजन (मंत्र या श्लोक), कुछ तस्वीरों के साथ, भक्तों का मार्गदर्शन करने के लिए दीवारों पर खूबसूरती से पोस्ट किए गए हैं, मंदिर पूरे आसपास को शांत, काफी और दिव्य बनाता है।

दशहरे के दौरान बिरला राम मंदिर में भगवान राम से आशीर्वाद लेने के लिए ५०,००० से अधिक भक्त आते हैं। जन्माष्टमी (भगवान राम की जयंती) का त्योहार यहां बहुत उत्साह के साथ मनाया जाता है और इस दिन मंदिर को रोशनी और फूलों से सजाया जाता है, इसी तरह दिवाली और ऐसे अन्य शुभ अवसरों पर मंदिर में भक्तों की भीड़ रहती है।

मंदिर का दर्शन सुबह ६:०० बजे से रात १०:०० बजे तक किया जा सकता है। मंदिर शनिवार और रविवार के साथ-साथ सार्वजनिक अवकाश पर भी खुला रहता है।

डॉ. पंजाबराव देशमुख कृषि विद्यापीठ

डॉ. पंजाबराव देशमुख कृषि विद्यापीठ अकोला की स्थापना २० अक्टूबर १९६९ को 'अकोला' में अपने मुख्यालय के साथ की गई थी। इस कृषि विश्वविद्यालय का नाम विदर्भ के प्रसिद्ध पुत्र डॉ. पंजाबराव (उर्फ भाऊसाहेब) देशमुख के नाम पर रखा गया था, जो तत्कालीन कृषि मंत्री थे। विश्वविद्यालय का अधिकार क्षेत्र विदर्भ के ग्यारह जिलों में फैला हुआ है। विश्वविद्यालय अधिनियम १९८३ (महाराष्ट्र सरकार) के अनुसार, विश्वविद्यालय को ब्रीडर और नींव बीज कार्यक्रम के साथ कृषि शिक्षा, अनुसंधान और विस्तार शिक्षा की जिम्मेदारी सौंपी गई है। विश्वविद्यालय का मुख्य परिसर अकोला में है। मुख्य परिसर में शिक्षण कार्यक्रम ५ कॉलेजों में फैले हुए हैं अर्थात् कृषि कॉलेज, कृषि इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी कॉलेज, वानिकी कॉलेज, बागवानी कॉलेज और स्नातकोत्तर संस्थान। इस परिसर में ४ डिग्री प्रोग्राम अर्थात् बीएससी (एग्री.) बी.एससी (हॉर्ट.), बी.एससी (वानिकी) और बी.टेक. (एजी.इंजी.), दो मास्टर्स डिग्री प्रोग्राम अर्थात एमएससी (एग्री.) और एम.टेक. (एग्री. इंजीनियरिंग) और कृषि के संकायों में डॉक्टरेट डिग्री कार्यक्रम. इंजीनियरिंग की पेशकश की जाती है। विश्वविद्यालय का नागपुर में एक उप-परिसर है, जिसमें घटक कॉलेज, कृषि कॉलेज है जो बीएससी (एग्री.) और एम. एससी. (कृषि) डिग्री कार्यक्रम। नागपुर परिसर एक बगीचे के साथ है, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता से घिरा हुआ है। एक अच्छी स्थापित चिड़ियाघर है जो शहर में आम जनता और आगंतुकों को आकर्षित करता है। शोध कर्मियों के लाभ के लिए २२ हेक्टेयर पर एक अलग वनस्पति उद्यान का रखरखाव किया जा रहा है जिसमें एक ग्रीन हाउस भी है, इसके अलावा इस विश्वविद्यालय की छत्रछाया में २ संबद्ध अनुदान सहायता महाविद्यालय और १४ निजी गैर-अनुदान सहायता महाविद्यालय है। केंद्रीय अनुसंधान केंद्र मुख्य परिसर में स्थित है जो क्षेत्र के प्रमुख फसलों कपास, ज्वार, तिलहन और दलहन के फसल वैज्ञानिकों द्वारा किए गए अनुसंधान परियोजनाओं की आवश्यकता को पूरा करता है।

अकोला में अग्रवाल महिलाओं की सेवाएं

अकोला: अग्रवाल समिति के संस्थापक अध्यक्ष माननीय स्वर्गीय श्री जमनालालजी गोयनका ने अग्र समिति के तत्वावधान में अग्रवाल महिला मंडल की स्थापना की १९७९ में। प्रथम सौ महिलाओं का संगठन की जिम्मेदारी शकुन्तला जी मोदी १९८१ से ८३ तक, श्रीमती राजकुमारी जी गोयनका १९८३ से ८९ तक व श्रीमती मंगला लोहिया ने महिला जागृति के उद्देश्य से दी गयी। समाजिक मर्यादा के साथ-साथ महिलाओं को आत्म समान मिले और वे समाजिक संघटन में आगे आयें, यह ही उद्देश्य था।

अग्रवाल महिला मंडल द्वारा हर साल अंध विद्यालय, वृद्ध आश्रम, मूक बधिर स्कूल, मतिमंद बच्चों के स्कूल में जरूरत के हिसाब से जिस चीज की जरूरत होती है, हमेशा वितरित करते रहते हैं। महिला मंडल की ओर से जल सेवा दी जाती है, इसी तरह मंडल द्वारा धार्मिक प्रोग्राम भवन में किए जाते हैं। सामाजिक कार्य में किसी गरीब को सिलाई मशीन की जरूरत हो या आर्थिक मदद की जरूरत हो, घरेलू उद्योग लगाने के लिए हमेशा अग्रवाल महिला मंडल तत्पर रहती है।

अग्रवाल महिला समाज द्वारा सामूहिक विवाह भी करवाए जाते हैं। गरीब छात्रों को छात्रवृत्ति की व्यवस्था भी की जाती है। विधवा निराधार लोगों को हर महीने दवाइयों के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान किये जाते है। पूरे जिले में ना नफा,ना नुकसान के तहत लड़कियों व महिलाओं के लिए सर्वप्रथम मेहंदी, पेंटिंग, राखी मेकिंग, ग्रीटिंग कार्ड, पार्लर का कोर्स, रंगोली, ग्लास पैंटींग, फेब्रिक पेंटिंग की क्लास, सिलाई की क्लास भवन में मुफ्त चलाया जा रहा है, जिसका खर्च और मशीन समिती द्वारा किया जाता है, जिसमें समाज की १००० से अधिक लड़कियों ने लाभ लिया है। कैदी महिला के लिये सेंट्रल जेल में सिलाई वर्ग भी चलाया जा रहा है। ट्रस्ट के सहयोग से ५६ जोड़ों का सामूहिक विवाह भी करवाया गया व नेत्रहीनों के लिए ब्रेल स्लॉट, ब्रेल स्टेट, ब्रेल वॉच, ब्रेल ऑरचेस्टा वस्तुओं का वितरण किया गया, जिसका लाभ लगभग ८० लोगों को मिला। सावित्रीबाई कल्याण योजना के अंतर्गत लगभग २० गरीबों व अनाथ लड़कियों को शिक्षा हेतु दत्तक लेकर उनके शैक्षणिक खर्च का वहन किया गया। १७ अगस्त को वेरीकोस वेंस (नसो की समस्या) पर सेमिनार डॉ. राज किरण राठी द्वारा लिया गया, जिसमें महिलाओं में होने वाली समस्या पर चर्चा की गई और इसका लाभ लगभग डेढ़ सौ महिलाओं ने उठाया। वर्तमान में संस्था के अध्यक्ष श्रीमती कृष्णा पाडिया व सचिव श्रीमती संतोष केडिया हैं, इनकी टीम सभी कार्यों को सेवाभाव के हिसाब से कर रही हैं।

अकोला के अग्र परिवार द्वारा स्थापित संत तुकाराम हॉस्पिटल एंड मेडिकल सेंटर

अकोला: अग्रसेन भवन ट्रस्ट का निर्माण १९८२ में किया गया, इसके प्रमुख ट्रस्टी श्री गंगाधर मूलचंद अग्रवाल हैं जिनके द्वारा लगभग २ एकड़ जमीन खरीदकर संत तुकाराम हॉस्पिटल के निर्माण के लिए दान की गई। प्रारंभ में भवन निर्माण कर फर्नीचर का काम प्रारंभ किया गया, तत्पश्चात यहां के समाजसेवियों द्वारा हॉस्पिटल के विकास के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान किया, जिससे यहां एक रेडिएशन यूनिट प्रारंभ किया गया, जिसकी मशीन कनाडा से मंगाई गई, पर यहां के जो संपन्न लोग थे वह इलाज के लिए मुंबई व अन्य स्थानों पर जाने लगे, जो आर्थिक रूप से कमजोर थे वे यहीं पर इलाज के लिए इस हॉस्पिटल में आते हैं, जिससे आर्थिक संकट निर्माण होने लगा, जिस कारण १९९० से १९९९ तक यह सेंटर बंद कर दिया गया।

२००८ में गिरीश अग्रवाल जी के प्रयासों से, आरोग्य भवन मंत्रालय की जीवनदाई योजना के तहत इस हॉस्पिटल की पुनः शुरुआत की गई। समाज व अन्य लोगों के प्रयास से २०११-१२ के बाद हॉस्पिटल की उत्तरोत्तर वृद्धि होती गई। आज हॉस्पिटल अपनी विशेष पहचान बनाए हुए है, यहां कीमोथेरेपी भी कराई जाती है और सप्ताह में एक या दो सर्जरी भी होती है साथ ही कैंसर मरीजों को इलेक्ट्रॉन प्रोटॉन भी प्रदान किया जाता है। वर्तमान में यह नागपुर-नासिक व आस-पास के आठ जिलों का एक मात्र कैंसर का अस्पताल है।

प्रकृति की सुंदरता को सजाए हुए महाराष्ट्र का एक जिला 'अकोला' के इतिहास प्रकाशन पर 'मैं भारत हूँ' परिवार को
हार्दिक शुभकामनायें
अनिल शंकरलाल मुंदड़ा
Mob. : 9422161386
हरिओम मोटर्स
दीपक चौक, अकोला, महाराष्ट्र, भारत-४४४००१

कोई भी राजनीतिक कारण कितने ही प्रबल क्यों न हों, 'हिन्दी' भाषा के इस उत्थान में आड़े आने नहीं देना चाहिए - बिजय कुमार जैन

अकोला में वरिष्ठ नागरिक महिला प्रकोष्ठ

वरिष्ठ नागरिक का सम्मान समाज की आराधना है, इस संकल्प के साथ वसंत पंचमी के पावन पर्व पर सन २००२ में अकोला माहेश्वरी समाज, वरिष्ठ नागरिक महिला प्रकोष्ठ की स्थापना की गई।

उम्र के इस पड़ाव में वरिष्ठ पारिवारिक जिम्मेदारियों से मुक्त होते हैं और बचे हुए सुयोग्य बातें करने का अवसर मिलता है। व्यस्त रहने से उत्साह और ऊर्जा का समाज के लिए सही उपयोग कर पाते हैं।

वरिष्ठ के पास अनुभवों का भरपूर खजाना होता है, जिससे सशक्त समाज निर्माण में सहयोग मिलता है तथा संयुक्त परिवार की नींव मजबूत होती है।

संगठन के माध्यम से धार्मिक, अध्यात्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक, शारीरिक स्वास्थ्यवर्धक जैसे आयोजनों द्वारा उत्साह, उमंग तथा नवचेतना का संचार होता है।

साहित्य सृजन, सांस्कृतिक आयोजन, विशेष उद्बोधन द्वारा संस्कृति का जतन, व्यक्तित्व का गठन तथा स्वस्थ, व्यस्त और मस्त रहने का बोध मिलता है।

मेल-मिलाप के माध्यम से एकाकी जीवन को पूर्णविराम लगता है। हम उम्र के साथ जीवन का रंग खिलने लगता है। वरिष्ठ की समस्याओं का समाधान और सही सुयोग्य दिशा, इन उद्देश्यों को सम्मुख रखकर सफल और साकार करने हेतु 'अकोला' में माहेश्वरी समाज द्वारा वरिष्ठ नागरिक महिला प्रकोष्ठ की स्थापना भी की गई, जिसकी संस्थापिका हैं श्रीमती सुशीला कृष्णगोपालजी गांधी, श्रीमती शकुंतला नारायणदासजी चांडक।

सन २०१९ से २०२२ के पदाधिकारी मार्गदर्शक

श्रीमती सुलोचना सिंगी (सचिव), श्रीमती मंगला तापडीया (उपाध्यक्षा), श्रीमती प्रमिला लाहोटी (उपाध्यक्षा), श्रीमती शान्ता लड्ढा (सह-सचिव), श्रीमती अरूणा लड्ढा (सह-सचिव), श्रीमती लीला भट्टड (कोषाध्यक्षा), श्रीमती फुलकंवर बंग (अंकेक्षक), श्रीमती सुशीला गांधी (संस्थापिका), श्रीमती शकुंतला चांडक (संस्थापिका), श्रीमती डॉ.सरोज राठी (पूर्वाध्यक्षा), श्रीमती राजकुंवर लड्ढा (पूर्वाध्यक्षा), श्रीमती विमला मोहता (पूर्वाध्यक्षा), श्रीमती लीला जाजू (पूर्वाध्यक्षा), श्रीमती शारदा मंत्री (अध्यक्षा)

शारीरिक स्वास्थ्यवर्धक आयोजन संयोजिका डॉ. सरोज राठी ने स्वस्थ माहेश्वरी ६० प्लस (फिटनेस, स्ट्रॉग बोन्स, नेचर आदी) कर्क रोग निदान शिबीर, स्त्री रोग निदान शिबीर, महिला लसीकरण, सुजोक थेरपी आदि करती हैं।

अकोला समाज द्वारा पर्यटन का आयोजन समय-समय पर...

- मथुरा वृंदावन (८ दिवसीय यात्रा)
- राजस्थान (११ दिवसीय भ्रमण) कुलदेवियों के दर्शन
- बासर तथा नांदेड (३ दिवसीय यात्रा)
- परली वैजनाथ ज्योतीर्लिंग (३ दिवसीय यात्रा)
- नाशीक सापुतारा वणी (३ दिवसीय यात्रा)
- गुजरात भ्रमण शक्ति पीठ, डाकोरणी, पोयचा, कुबेर भंडारी (४ दिवसीय यात्रा)

अकोला से प्रकाशित साहित्य व साहित्यकार

- साहित्य सृजन संपादिका : राजकुंवर लढा
- संस्कृतिरो- जतन (राजस्थानी पुस्तिका)
- स्नेह सेतु (मासिक)
- कलात्मक रामनाम लेखन की ५ पुस्तिकाएँ
- अमृतवाणी
- अपने त्यौहार अपनी विरासत (हिन्दी)
- रतजगा (राती जोगा) के गीत पुस्तिका तथा सीडी

(प्रतिवर्ष इस प्रकार की विविधता पूर्ण गतिविधियाँ होती रहती हैं।)

समर्थ राठी को गीता व्रती परीक्षा में मिली सफलता

अकोला वरिष्ठ नागरिक प्रकोष्ठ के सदस्य महेशकुमार राठी के पौत्र समर्थ सर्वेश राठी ने गीता श्लोक की गीता व्रती परीक्षा उत्तीर्ण कर शहर का नाम रोशन किया है। गीता परिवार द्वारा आयोजित श्रीमद्भागवत गीता में समाविष्ट ७०० श्लोकों को कंठस्थ कर परीक्षक के समक्ष आंखें मूंद कर पूछे गए श्लोक एवं उसके बाद आने वाले श्लोक बताने होते हैं।

समर्थ राठी को इस परीक्षा में १०० में से ९९ अंक मिले हैं, इसी तरह गीता पाठक में २०० में से १९७, गीता पथिक ४०० में से ४००, गीता व्रती में ६०० में से ५९० अंक प्राप्त हुए हैं। बालक समर्थ अपनी इस सफलता का श्रेय अपनी दादी मृदुला राठी तथा दादा महेश राठी को देते हैं। इस गौरव के लिए 'सुप्रभात सत्संग मंडल' की ओर से १७ जुलाई को समर्थ राठी को मोमेंटो प्रदान कर पुष्प द्वारा स्वागत किया गया।

सम्मान समर्थ राठी का

देश की शान, हिंदी है महान-बिजय कुमार जैन

अकोला में राजस्थानी समाज

राजस्थान की झांकी कहलाने वाला 'अकोला' शहर आज भी राजस्थानी परंपराओं को, राजस्थानी त्योहारों और सभी रीति-रिवाजों के लिए पूरे विदर्भ में अग्रगण्य शहर है। शहर की विशेषता यह है कि यहां अग्रवाल, माहेश्वरी, जैन, ब्राह्मण, खत्री, खंडेलवाल इत्यादि सभी राजस्थानी समाज मिलाकर १०,००० से ज्यादा परिवार हैं। सभी सामाजिक कार्यों में, राजनीतिक पकड़ में, उद्योग व्यापार के क्षेत्र में अग्रणीय रहते हैं। राजस्थानी समाज का एक अभूतपूर्व उदाहरण यहां के विधायक श्री गोवर्धन जी शर्मा, जो विगत ३० वर्षों से यहां के विधायक है। यहां की जनता द्वारा ६ बार भाजपा की सीट पर निर्वाचित हुए हैं। सभी समाज बंधुओं में आपको सम्मान है। कोई भी विपदा हो या अन्य कोई देश का कार्य हो, इसमें समाज बढ़-चढ़कर कार्य करता है। 'अकोला' शहर में माहेश्वरी भवन, खंडेलवाल भवन, ब्राह्मण भवन इत्यादि शादी-विवाह के लिए उपलब्ध हैं।

- वसंत बाछुका, अध्यक्ष

अग्रवाल समिति, अकोला

'अकोला' शहर न केवल विदर्भ में अपितू पुरे महाराष्ट्र में 'कॉटन सिटी' के नाम से प्रसिद्ध है। अकोला शहर नॅशनल हायवे नं.६ मुंबई-कलकत्ता रेलवे मार्ग पर स्थित है व महाराष्ट्र का एक जानामाना शहर है।

'अकोला' शहर में अग्रवाल समाज द्वारा किए गए विभिन्न कार्यों के कारण अग्रणीय स्थान बना है।

* अकोला शहर में दो भव्य अग्रसेन भवन, ९०० घरों की आवासीय लाला लाजपतराय कॉलोनी, अग्रसेन बैंक, अग्रसेन पत संस्था, प्रशस्त अग्रसेन चौक व भव्य अग्रसेन द्वार है, यहॉ लगभग १८०० अग्रवाल परिवार भाईचारे के साथ हिलमिल कर रहते हैं।
* अकोला शहर में 'महाराजा श्री अग्रसेन जयंती' बड़े ही धुमधाम से ८ से १० दिनों तक मनाई जाती है, जिसमें विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेलकुद तथा ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। अग्रसेन जयंती के दिन विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया जाता है। शहर के प्रमुख मार्गों से यह शोभायात्रा गुजरती है तथा जगह-जगह पर इस शोभायात्रा का भव्य स्वागत होता है। श्री अग्रसेन जयंती के अवसर पर अग्रवाल समिती, अग्रवाल महिला मंडल, अग्रवाल नवयुवक मंडल, अग्रवाल नवयुवती मंडल, अग्रवाल बहु-बेटी मंडल आदी का सक्रिय सहयोग रहता है।
* अग्रवाल समिती द्वारा विवाह योग्य युवक-युवतियों के लिए परिचय सम्मेलन का आयोजन किया जाता है। यह आयोजन दो चरणों में संपन्न होता है। पहले दिन शिक्षित तथा दुसरे दिन उच्चशिक्षीत युवक-युवतियों का परिचय सम्मेलन किया जाता है।
* प्रतिवर्ष अग्रवाल समाज बांधवों के लिए दिपावली के शुभ अवसर पर 'अन्नकुट प्रसाद' अग्रसेन भवन ट्रस्ट तथा अग्रवाल समिती द्वारा आयोजित किया जाता है।
* अग्रवाल समाज के जरूरतमंद छात्रों को अग्रवाल समिती द्वारा प्रतिवर्ष निःशुल्क किताबें तथा लेटरबुक का वितरण किया जाता है।
* अग्रवाल समिती द्वारा रूग्णवाहिका समाज के लिए उपलब्ध है।
* अग्रवाल युवक-युवती के लिए प्रत्येक रविवार को अग्रसेन भवन में निःशुल्क बायोडाटा सम्मेलन का आयोजन किया जाता है।
* 'जीवन साथी' नाम से अग्रवाल विवाह योग्य युवक-युवती के लिए व्हाटसअप पर पूरी जानकारी निःशुल्क उपलब्ध है।
* अग्रवाल समाज के लिए शुभ-अशुभ प्रसंगों की सूचना तुरंत देने के लिए अग्रवाल समिती द्वारा SMS की सुविधा समाज बांधवों के लिए उपलब्ध है।
* अकोला शहर के सभी नागरिकों के लिए समय-समय पर चिकित्सा शिविरों का आयोजन किया जाता है।
* अग्रवाल समाज के जरूरतमंद तथा होशियार छात्रों को शिक्षा हेतू आर्थिक योगदान दिया जाता है।
* शहर के निराधार, विधवा एवं गरीब महिलाओं को आर्थिक मदद दी जाती है।
* प्रतिवर्ष होनहार छात्रों को शिक्षा में अच्छे अंक लाने पर प्रोत्साहित करने के लिए प्रमाणपत्र तथा पुरस्कार दिये जाते है, यह पुरस्कार तीन स्तर मे दिए जाते है:

१) कक्षा नर्सरी से कक्षा ९ वीं तक २) कक्षा १० वीं से स्नातक स्तर तक ३) स्नातकोत्तर तथा उच्चशिक्षीत छात्रों को

* जिन छात्रों ने खेलकुद में विशेष विधा प्राप्त की है, पुरस्कार देकर उन्हें भी सम्मानित किया जाता है।
* अकोला शहर में 'राजस्थानी समाज' गठित है, जिसमें अग्रवालों की महत्वपूर्ण भुमिका व प्रभाव है।
* अकोला शहर के सभी राजकिय, धार्मिक, व्यापारिक, औद्योगिक क्षेत्रों के कार्यों में अग्रवाल समाज अपनी महत्वपुर्ण भुमिका निभाता है।
* भविष्य की योजनाएँ :- १) अग्रसेन भवन का नुतनीकरण २) अग्रवाल छात्रावास का निर्माण ३) अग्रसेन शाला का प्रारंभ ४) स्पर्धा परिक्षाओं के लिए सभी समाज के छात्रों के लिए ग्रंथालय का निर्माण करना है।

यदि बढ़ाना है देश को विकास की ओर, तो दें हिंदी भाषा पर जोर-बिजय कुमार जैन

आत्मशुद्धि का पर्व - पर्वाधिराज पर्युषण पर्व

लहरों को मझधार नहीं, किनारा चाहिए
हमें चांद सुरज नहीं, सितारा चाहिए
मोह-माया में भटकी, इस आत्मा को
प्रभु महावीर के संदेशों का सहारा चाहिए

जैनों के चौबीसवें तीर्थंकर तीर्थंकर महावीर का नाम लेते ही व्यक्ति नहीं, सत्य का आभास होने लगता है। सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकांतवाद, ब्रह्मचर्य, अभय, क्षमा के प्रतीक तीर्थंकर महावीर के उपदेशों, सिद्धांतों के प्रसार-प्रचार की आज अत्यंत आवश्यकता है।

आज समस्त विश्व हिंसा की कगार पर खड़ा है, ऐसे में जरूरत है 'विश्व मैत्री दिवस' 'क्षमा-याचना' दिवस मनाने की। जैनों का महत्वपूर्ण महापर्व पर्वाधिराज 'पर्युषण' एवम् क्षमापर्व 'संवत्सरी दिवस' फिर एक बार दुनिया को क्षमा का, प्रेम का अमर संदेश देने के लिये आया है।

पर्युषण शब्द संस्कृत का शब्द है। प्राकृत अर्धमागधी में इसे पज्जोसवणा, पज्जुसणा या पज्जोसमणा कहा जाता है। कहते हैं वर्ष में चार अष्टान्हिक पर्व आते हैं, कुछ प्राचीन ग्रंथों में छह अष्टान्हिक (आठ दिनों तक मनाया जाने वाला) पर्वों का भी उल्लेख है। माना जाता है कि इन दिनों में देवगण नंदीश्वर दीप में आते हैं और वहाँ अट्ठाई महोत्सव मनाते हैं, यह अट्ठाई महोत्सव आठ दिन (श्वेताम्बर) का होता है इसलिये श्वेताम्बर पर्युषण पर्व आठ दिन के मनाने की एक प्राचीन परंपरा चल रही है।

पर्वाधिराज पर्युषण पर्व जो आत्मा के निकट जाकर परिमार्जन, परिष्करण, प्रतिक्रमण का अर्थबोध प्रदान करता है। आत्म-ज्ञान से शाश्वत संदेश देता है। आठ दिन तक मनाया जाने वाला यह पर्व शुद्ध आध्यात्मिक पर्व है, इसके भी दो पक्ष हैं। एक बाह्य और दूसरा आंतरिक। बाह्य की साधना में श्रावक-श्राविका (पुरूष-स्त्री) उपवास, पोषध, प्रतिक्रमण करना व्याख्यान (प्रवचन) सुनना, कंद-मूल, हरी सब्जियाँ - रात्रि भोजन का त्याग करना, ब्रह्मचर्य का पालन, साधार्मिक भक्ति, अभयदान, क्षमापना और अट्ठम तप आदि कर्तव्यों का पालन करते हैं। (जैन साहित्य में आठ अंक विशिष्ट महत्व रखता है। सिद्ध भगवान के आठ गुण बताये गये हैं जो आठ कर्मों का क्षय करने से आत्म स्वभाव के रूप में प्रकट होते हैं। साधु की प्रवचन माता आठ हैं। अष्ट मंगल जो प्रत्येक शुभ कार्य के पहले मांडे जाते हैं। आत्मा के सूचक प्रदेश भी आठ है। अट्ठाई पर्व के भी आठ दिन हैं, ये सारी क्रियाएँ भी एक तरह से आंतरिक पक्ष को संबल प्रदान करती हैं। दूसरा पक्ष है आत्मशुद्धि, विश्व मैत्री और क्षमा-याचना का। कहते हैं अंतस के दो प्रबल शत्रु होते हैं राग और द्वेष। ये दो शत्रु ही हमारे नैतिक पतन का प्रमुख कारण बनते हैं। क्रोध, मोह-माया-लोभ, परिग्रह के शिकंजे में फंसकर मानव अनगिनत अपराधों में लिप्त हो जाता है, ये पर्व हमें संदेश देता है। कटुता-अनबन, राग-द्वेष के भावों से मुक्त होकर क्षमा-प्रेम-स्नेह, मानवता और आत्मशुद्धि के रंग में रंग जाओ। आत्मशुद्धि के लिये सबसे महत्वपूर्ण है क्षमायाचना, वह भी अंतस मन से होनी चाहिये, ताकि मन में कोई विकार बाकी न रहे। ओशो कहते हैं ''महावीर सिर्फ जैन नहीं थे, वे जिन थे, स्वयं को जीतने वाले'' आत्म रुपांतरण की जो राह महावीर ने दिखाई वह आज भी उतनी ही सार्थक है। संवत्सरी दिवस के चार महत्वपूर्ण अंग है, चार आवश्यक कर्तव्य है जो हर साधक को करने चाहिये। उपवास, प्रतिक्रमण, आलोचणा और क्षमापना। उपवास से तन-मन दोनों की शुद्धि होती है।

उपवास का मतलब होता है अपनी आत्मा में रमण करना। तीर्थंकर महावीर चार-चार महीने का उपवास करते हैं जो इस बात का सबूत है कि उनके पास कितनी आत्मिक शक्ति थी। (आज भी कई साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका मासक्षमण (३० उपवास) या उससे अधिक उपवास करते हैं) आप भीतर चले जाते हैं तो बाहर का स्मरण छूट जाता है। महावीर की 'काया-क्लेश' का मतलब यही है कि काया की ऐसी साधना की जाये उसे ऐसा नियंत्रित किया जाये कि काया बाधक न रहकर साधक हो जाए। आज इस अर्थ को लोगों तक पहुँचाने की अत्यंत आवश्यकता है ताकि वीर की वाणी - वीर की धारा समूचे जगत में अखंड बहती रहे और अंतस के अंधेरे में सबके अंतर दीप जलते रहें।

'संवत्सरी दिवस' का सबसे बड़ा कर्तव्य है 'क्षमापना'। महावीर कहते हैं क्षमा मांगने से मनुष्य छोटा नहीं होता, बल्कि जो क्षमा मांगता और क्षमा देता है वह 'वीर' होता है 'क्षमा वीरस्य भूषणम' महावीर का जीवन चरित्र पढ़ें, वह कभी किसी से ना डरे, जो भी व्यक्ति आध्यात्मिक विकास करेगा, अपनी चेतना का उद्वारोहण करेगा उसका भय समाप्त हो जायेगा, जिस वीर के हाथ में क्षमा का अमोघ शस्त्र है, उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। क्षमा से शत्रु भी मित्र बन जाते हैं। क्षमापना का संदेश आत्मशक्ति का संदेश है, जीवन शुद्धि का महोत्सव है, विश्व-मैत्री की भावना है, यही भाव जीवन को निर्मल बनाता है। (संवत्सरी प्रतिक्रमण द्वारा, वर्ष भर हुई भुलों की, पापों की हम समालोचना करते हैं) अट्ठारह दिनों का यह समय अध्यात्म चिंतन का समय है। आत्मा से सभी विकारों का विसर्जन करने का समय है, समस्या के समाधान का समय है। आईए इस पावन पर्व पर हम अभय बनने का संकल्प करें, मन को पवित्र और निर्भय बनाने का मार्ग प्रशस्त करें।

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमतु में
भिति में सव्वे भुएसु वेर मज्जं न केणई...

- मंजू लोढ़ा जैन, मुम्बई

गत वर्ष हुई बोल-चाल व क्रिया द्वारा हुई किसी भी प्रकार की भूल-चूक के लिए
मिच्छामि दुक्कड़म
निवेदक : अशोक कुमार जैन, विक्की जैन,
मनीष जैन, नमन जैन, मिष्ठी जैन
BSC BALAJI SCIENTIFIC & CHEMICALS
Deals In:-
All type of Laboratory Chemicals,
Glass ware, Instruments

222, Saral Pepal Thalia,
Opp. Adarsh Nagar, Delhi, Bharat-110033
Ph. No. 9810553316. 9810553376
E-Mail balajiscience@yahoo co in
balajiscientific01@mmall.com
Vicky Jain - Director
Balaji Scientific & Chemicals

क्षमा यज्ञ है

अपनी आत्मा को विकार (राग-द्वेष, ईर्ष्यादि) रहित एवम् ज्ञान स्वभाव से परिपूर्ण करना ही क्षमा है, यदि कोई आकर हमें गालियाँ देने लगे तो उस समय पर क्रोध न करना, सभी से क्षमा माँगना, सभी के प्रति मैत्री एवम् समभाव रखना, वैर का परित्याग करना और स्वयं निर्विकारी बने रहना ही 'क्षमा' है। हमारे भारतवर्ष में 'क्षमा भाव' को धारण कर, हम सभी जैनी भाई-बहन पर्व के रुप में राष्ट्रीय स्तर पर मनाते हैं।

'क्षमा' हमारे पारस्परिक वैमनस्य को समाप्त करके हमें निर्विकारी बने रहने की प्रेरणा देती है।

जिस प्रकार हम क्षमापना पर्व मनाते हैं, उसी तरह यह दिवस पूरे विश्व में अलग-अलग तिथियों एवम नामों से मनाया जाता है। पश्चिम एशिया के कोने में बसा एक छोटा सा नगर शक्तिशाली देश इजरायल, हर वर्ष १६ सितम्बर को 'प्रायश्चित दिवस' मनाते हैं। राष्ट्रीय दिवस के रूप में संस्थान आदि बंद रखते हैं, इस दिन सभी आत्मचिन्तन करते हैं तथा अपनी सामाजिक समस्याओं को हल करते हैं। इससे देशवासियों का नैतिक व राष्ट्रीय चरित्र ऊँचा होता है, शायद यही कारण है कि इजरायल देश में व्यक्तिगत व सामाजिक विवाद बहुत कम होता है और उनका सामाजिक व राष्ट्रीय संगठन बहुत ही मजबूत है।

गुरु रामदास प्रतिदिन दो-तीन घर से भोजन मांग लिया करते और जो कुछ मिल जाता उसी को पूरे दिन का भोजन समझ लिया करते, एक दिन वे भोजन के लिए एक दरवाजे पर जाकर खड़े हुए और भिक्षा के लिए गृहस्वामिनी को आवाज लगाई, उस दिन घर की मालकिन किसी कारणवश क्रोध से भरी हुई थी, ऐसी स्थिति में गुरु की आवाज ने अग्नि में घी का काम किया। गुरु की आवाज सुनकर वह क्रोध से उबल पड़ी और जिस पोतने (सफाई करने वाला कपड़ा) से चौका धो रही थी, वही उनके मुख पर दे मारा।

यह सब देख गुरु रामदास न तो दु:खी हुए और न ही रुष्ट हुए। मुस्कराते हुए उस पोतने को लेकर वह नदी के किनारे पहुँचे, वहाँ जाकर उन्होंने पहले स्नान किया, फिर उसने पोतने को खूब अच्छी तरह धोकर, सुखाकर घर ले आये और शाम को उस कपड़े से आरती के लिए बत्ती बनाकर भगवान से प्रार्थना की कि 'हे प्रभु! जिस तरह ये बत्तियाँ प्रकाश दे रही हैं, उसी तरह उस माता का हृदय भी प्रकाशमान रहे।'

'क्षमाशील' व्यक्ति अपने कष्टों को नहीं देखते, अपितु दूसरों की पीड़ा को देखकर द्रवित होकर, उनको भी दु:ख से दूर रहने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहते हैं।

आध्यात्मिक पर्व पर्युषण

दुनिया के सबसे प्राचीन धर्म जैन धर्म को श्रमणों का धर्म कहा जाता है। जैन धर्म का संस्थापक ऋषभ देव को माना जाता है, जो जैन धर्म के पहले तीर्थंकर थे और भारत के चक्रवर्ती सम्राट भरत के पिता थे। वेदों में प्रथम तीर्थंकर ऋषभनाथ का उल्लेख मिलता है। जैन धर्म में कुल २४ तीर्थंकर हुए हैं। तीर्थंकर अरिहंतों में से ही होते हैं। जैन संस्कृति में जितने भी पर्व व त्योहार मनाए जाते हैं, लगभग सभी में तप एवं साधना का विशेष महत्व है। जैनों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पर्व है 'पर्युषण पर्व'। 'पर्युषण पर्व' का शाब्दिक अर्थ है आत्मा में अवस्थित होना। पर्युषण का एक अर्थ है कर्मों का नाश करना। कर्मरूपी शत्रुओं का नाश होगा तभी आत्मा अपने स्वरूप में अवस्थित होगी, अतः यह पर्युषण पर्व आत्मा का आत्मा में निवास करने की प्रेरणा देता है।

यह सभी पर्वों का राजा है, इसे आत्मशोधन का पर्व भी कहा गया है, जिसमें तप कर कर्मों की निर्जरा कर अपनी काया को निर्मल बनाया जा सकता है। पर्युषण पर्व को आध्यात्मिक दिवाली की भी संज्ञा दी गई है, जिस तरह दिवाली पर व्यापारी अपने संपूर्ण वर्ष का आय व्यय का पूरा हिसाब करते हैं, गृहस्थ अपने घरों की साफ-सफाई करते हैं, ठीक उसी तरह पर्युषण पर्व के आने पर जैन धर्म को मानने वाले लोग अपने वर्ष भर के पुण्य पाप का पूरा हिसाब करते हैं, वे अपनी आत्मा पर लगे कर्म रूपी मैल की साफ-सफाई करते हैं। पर्युषण महापर्व मात्र जैनों का पर्व नहीं है, यह एक सार्वभौम पर्व है, पूरे विश्व के लिए यह एक उत्तम और उत्कृष्ट पर्व है, क्योंकि इसमें आत्मा की उपासना की जाती है। संपूर्ण संसार में यही एक ऐसा उत्सव या पर्व है जिसमें आत्मरत होकर व्यक्ति आत्मार्थी बनता है व अलौकिक, आध्यात्मिक आनंद के शिखर पर आरोहण करता हुआ मोक्षगामी होने का सद्प्रयास करता है। पर्युषण आत्म जागरण का संदेश देता है और हमारी सोई हुई आत्मा को जगाता है। यह आत्मा द्वारा आत्मा को पहचानने की शक्ति देता है। पर्युषण पर्व जैन धर्मावलंबियों का आध्यात्मिक त्योहार है। पर्व शुरू होने के साथ ही ऐसा लगता है मानो किसी ने दस धर्मों की माला बना दी हो, यह पर्व मैत्री और शांति का पर्व है। जैन धर्मावलंबी भाद्रपद मास में पर्युषण पर्व मनाते हैं। श्वेताम्बर संप्रदाय के पर्युषण ८ दिन चलते हैं, उसके बाद दिगम्बर संप्रदाय वाले १० दिन तक पर्युषण मनाते हैं, उन्हें वे दसलक्षण के नाम से भी संबोधित करते हैं, यह पर्व अपने आप में ही क्षमा का पर्व है, इसलिए जिस किसी से भी आपका बैरभाव है, उससे शुद्ध हृदय से क्षमा मांग कर मैत्रीपूर्ण व्यवहार करें।

भारतीय संस्कृति का मूल आधार तप, त्याग और संयम हैं, संसार के सारे तीर्थ जिस प्रकार समुद्र में समाहित हो जाते हैं, उसी प्रकार दुनिया भर के संयम, सदाचार एवं शील ब्रह्मचर्य में समाहित हो जाते हैं। मानव की सोई हुई अन्तः चेतना को जागृत करने, आध्यात्मिक ज्ञान के प्रचार, सामाजिक सद्भावना एवं सर्व धर्म समभाव के कथन को बल प्रदान करने के लिए पर्यूषण पर्व मनाया जाता है, साथ ही यह पर्व सिखाता है कि धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि की प्राप्ति में ज्ञान व भक्ति के साथ सद्भावना का होना भी अनिवार्य है, जैन धर्म में दस दिवसीय पर्युषण पर्व एक ऐसा पर्व है जो 'उत्तम क्षमा' से प्रारंभ होता है और क्षमा वाणी पर ही उसका समापन होता है। क्षमा वाणी शब्द का सीधा अर्थ है कि व्यक्ति और उसकी वाणी में क्रोध, बैर, अभिमान, कपट व लोभ ना हो। दशलक्षण पर्व, जैन धर्म का प्रसिद्ध एवं महत्वपूर्ण पर्व है। दशलक्षण पर्व संयम और आत्मशुद्धि का संदेश देता है।

दशलक्षण पर्व साल में तीन बार मनाया जाता है लेकिन मुख्य रूप से यह पर्व भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी से लेकर चतुर्दशी तक मनाया जाता है। दशलक्षण पर्व में जैन धर्म के जातक अपने मुख्य दस लक्षणों को जागृत करने की कोशिश करते हैं। जैन धर्मानुसार दस लक्षणों का पालन करने से मनुष्य को इस संसार से मुक्ति मिल सकती है। संयम और आत्मशुद्धि के इस पवित्र त्यौहार पर श्रद्धालु श्रद्धापूर्वक व्रत-उपवास रखते हैं। मंदिरों को भव्यतापूर्वक सजाते हैं तथा तीर्थंकर महावीर का अभिषेक कर विशाल शोभा यात्राएं निकाली जाती हैं, इस दौरान जैनव्रती कठिन नियमों का पालन भी करते हैं जैसे बाहर का खाना पूर्णतः वर्जित होता है, दिन में केवल एक समय ही भोजन करना आदि। पर्युषण पर्व की समाप्ति पर जैन धर्मावलंबी अपने यहां पर क्षमा की विजय पताका फहराते हैं और फिर उसी मार्ग पर चलकर अपने अगले भव को सुधारने का प्रयत्न करते हैं। आइए! हम सभी अपने राग-द्वेष और कषायों को त्याग कर तीर्थंकर महावीर के दिखाए मार्ग पर चलकर विश्व में अहिंसा और शांति का ध्वज फैलाएं, क्षमा करें और कराएं। जय भारत!

- बिजय कुमार जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
मैं भारत हूँ फाउंडेशन

हिंदी को जन साधारण की भाषा बनाना है, विदेशी भाषा से हनन को बचाना है-बिजय कुमार जैन

क्षमा-सुख का सागर है

जब सामने वाला आग बने, तुम बन जाना पानी
क्षमा सुख का सागर है, यह है महावीर की वाणी
निकल जाते हैं आंसु, कभी-कभी रोने से पहले
टूट जाते हैं ख्वाब, कभी-कभी सोने से पहले

क्षमा अनमोल तोहफा है, भूल सुधारने का
काश! कोई पा ले इसे, मृत्यु होने से पहले
'क्षमा वीरों का भूषण है' कथन महावीर का
क्षमा के बिन अहिंसा-पथ अपना नहीं सकते

कागज की कश्ती में डुबकी लगा नहीं सकते
सूरज पर जाकर, घर अपना बना नहीं सकते
कितना कारगर है, कथन यह प्रभु महावीर का
कि क्षमा के बिन खुशी के फूल खिला नहीं सकते

क्षमा के बिन आध्यात्मज्योति जला नहीं सकते
क्षमा के बिन प्रेमामृत, हम पिला नहीं सकते
क्षमा के बिन हम कभी, मोक्ष पा नहीं सकते
क्षमा के बिन मानवता को जिला नहीं सकते

रत्नों के बिना गलहार बेकार होता है
मानवता के बिना मानव बेकार होता है
सदा संघर्षों के बिना जुझने वाले मानव
क्षमा-दान के बिना तो जीवन भार होता है

बिना क्षमा के धर्म पताका फहरा नहीं सकते
बिना क्षमा के नेह का नाता, निभा नहीं सकते
क्षमा है वरदान समूचे जन समाज का
बिन क्षमा के किसी को अपना बना नहीं सकते

गत वर्ष हुई बोल-चाल व क्रिया द्वारा हुई किसी भी
प्रकार की भूल-चूक के लिए
खमत खामणा
JBR FOODS
JBR Celebrate With us
Sweets | Caterers | Events
WE PROVIDE WIDE RANGE OF VARIETY IN

| Sweets | Namkeen | Dry Fruit Box | Bhaji Box | Bakery Items |
| Customised Sweet Box | Chaat | Customised Hampers | Dry Fruit Cake |
| Rajasthani Grocery Items and All Types of Catering & Events |

We provide Home Deliveries, Take orders for Breakfast,
Birthday Parties, Anniversary Parties, Kitty Parties, etc.
A-25, G.T. Karnal Road Industrial Area, Delhi, Bharat - 110033
Follow us on : jbr foods jbr_foods M. : - 9358600600 / 9359600600

आत्मा को पूनित करने वाले माहामंगलकारी पर्यूषण महापर्व पर सभी
जैनाचार्यों, साधु-साध्वीजी, महाराज साहेब श्रावक-श्राविकाओं से
खमत खामणा
ॐ भिक्षु जय भिक्षु
JBP
JAI BH1KSHU PLYWOOD
WHOLESALER OF PLYWOOD DOOR
BLOCKBOARD VEENER LAMINATES
MUNDKA - DELHI
AJAY RANKA - 9310267962

यदि मुझे विश्वास हो जाये कि 'हिन्दी' राष्ट्रीय एकता में बाधक है, तो मैं 'हिन्दी' को सदा के लिए राष्ट्रभाषा पद से हटा लेने का प्रस्ताव करूँगा - सेठ गोविन्ददास

कृपया मुझे INDIA ना बोलें क्योंकि
मैं भारत हूँ

राजेश जैन
उपाध्यक्ष अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महासमिति
हरियाणा निवासी-दिल्ली प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८११३७०८४७

राजेश जी पर्यूषण पर्व की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि जैन धर्म अपने आप में संपूर्ण संयम का धर्म है जो हमें संयमित जीवन जीने की राह पर चलाता है और इस धर्म में क्षमा पर्व का विशेष स्थान है जो हमें जाने-अनजाने में हुई गलतियों का एहसास कर उसके लिए क्षमा मांगने के लिए प्रेरित करता है व अपनी आत्मग्लानी के भाव से मुक्त कराता है।

वर्तमान परिवेश में युवा पीढ़ी अपने धर्म और संस्कार से दूर होती जा रही है, उन्हें धर्म और समाज से किस तरह जोड़ा जा सके, वे मंदिर नहीं जाते, उन्हें किस तरह मंदिर से जोड़ा जा सके, इसके लिए प्रयास किया जाना चाहिए। हम मंदिर बनाने में लगे हुए हैं पर मंदिर में कैसे युवाओं को जोड़ सकते हैं, इस पर चर्चा होनी चाहिए और पर्यूषण पर्व के माध्यम से हम युवाओं को अपने धर्म-समाज से जोड़ सकते हैं। उस पर चर्चा की जानी चाहिए और इस पर सुधार होने की अत्यंत आवश्यकता है, अन्यथा बहुत देर हो जाएगी।

'जैन एकता' के विषय पर आपका कहना है कि जैन समाज में एकता होनी चाहिए और इसके लिए मर्यादा भी होनी चाहिए। मर्यादा सिर्फ श्रावकों में नहीं, बल्कि साधु-भगवंतों में भी होनी चाहिए। हमारे गुरु-भगवंतों को एक साथ-एक मंच पर बिठाकर इस पर प्रयास करना होगा तभी 'जैन एकता' की दिशा में कार्य निश्चित होगा।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए और यह हमारे केंद्र सरकार द्वारा ही संभव हो सकता है, जिस तरह आज मोदी जी ने हर घर तिरंगा का संदेश दिया है, उसी तरह इंडिया नहीं 'भारत' बोलो का संदेश दे दिया जाए तो अवश्य ही इसके प्रति जागृति आएगी।

राजेश जी मूलतः हरियाणा के फारुख नगर के निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा दिल्ली में संपन्न हुई है। यहां आप सर्राफा व्यवसाय 'वर्धमान ज्वेलर्स' के निर्देशक के रूप में कार्यरत हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी विशेष रूप से सक्रिय हैं। अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महासमिति के उपाध्यक्ष पद पर सेवारत हैं, जैन एकता मंच के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व नांगलोई सराफा असोशिएशन के कोषाध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं, अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं।

सुनील कुमार जैन
प्रधान दिगम्बर समाज ऋषभ विहार दिल्ली
भ्रमणध्वनि: ९७२०४७१२१२

सुनील जी पर्यूषण पर्व की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'पर्यूषण पर्व' जैन समाज का विशेष पर्व है, इसे क्षमा पर्व के रूप में भी जाना जाता है, इस अवसर पर हम आपसी वैमनस्य को भूल कर अपनी गलतियों के लिए क्षमा मांगते हैं, कभी अपने कार्यों व बातों से किसी को तकलीफ पहुंची हो तो हम क्षमा याचना कर आपसी बैर व दूराव को खत्म करने का प्रयास करते हैं। आपस में समभाव स्थापित करने का पर्व है, इस पर्व में आत्मशुद्धि का अनुभव प्राप्त होता है और आज के परिवेश में यह पर्व अत्यंत आवश्यक है क्योंकि आज हम अपने स्वार्थ के चलते कोई भी कार्य करते हैं जिससे अन्य को तकलीफ होती है, इसीलिए हम 'क्षमा' के माध्यम से हमारे द्वारा ही गलतियों के लिए 'क्षमा' याचना करते हैं, यदि हम ऐसा ना करें तो हम दोस्ती से ज्यादा दुश्मन उत्पन्न कर लेंगे, इसीलिए 'क्षमा' के माध्यम से सारे बैर को भुला देते हैं, हमें क्षमा मांगनी भी चाहिए और 'क्षमा' देनी भी चाहिए, यदि हम ऐसा ना करें तो इस पर्व का कोई अर्थ नहीं।

आज की युवा पीढ़ी को अपने धर्म और संस्कार से जोड़ने की अत्यंत आवश्यकता है, क्योंकि युवा पीढ़ी हमारे धर्म समाज का भविष्य है, वे ही समाज के संरक्षक है, अतः युवाओं को धार्मिक विषयों से जोड़ना अत्यंत आवश्यक है।

'जैन एकता' के विषय पर आपका कहना है कि 'जैन एकता' आज के परिवेश में बहुत ही आवश्यक है। हमारी संख्या वैसे भी कम है, उसमें भी अगर हम कई पंथों व समाज में बंटे रहें, तो हमारा कोई अस्तित्व नहीं रह जाएगा और इसके लिए हमारे गुरु-भगवंतों को विशेष रूप से कार्य करना होगा, साथ ही समाज के वरिष्ठ जनों को स्वार्थ छोड़ समाज कल्याण के विषय में सोचना होगा, तभी 'जैन एकता' स्थापित हो सकती है।

सुनील जी मूलतः दिल्ली के पास स्थित अतिशय क्षेत्र 'बड़ागांव' के निवासी हैं, आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा दिल्ली में ही संपन्न हुई है। दिल्ली स्थित ऋषभ विहार के दिगम्बर समाज के आप प्रधान के रूप में सेवारत हैं, साथ ही अन्य कई सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि यह बहुत जरूरी है कि अपने देश का एक ही नाम हो, क्योंकि 'भारत' नाम ही हमारी प्राचीन पहचान है और हमारी प्राचीन सभ्यता को दर्शाता है, अतः अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए।

हमारे देश की पहचान है हिंदी और हमारा अभिमान है हिंदी-बिजय कुमार जैन

वसंत बाछुका
अध्यक्ष महाराजा अग्रसेन भवन ट्रस्ट
चिड़ावा निवासी-अकोला प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२३०४२४१९

वसंत जी अपनी कर्मभूमि 'अकोला' के संदर्भ में कहते हैं अकोला कपड़ा उद्योग के लिए विशेष रूप से जाना जाता था। अंग्रेजों के समय से ही यहां २ कपड़ा मिल हुआ करती थी और पूरे भारत में २७ कपड़ा मिलें थी। वर्तमान में यहां कपड़ा उद्योग कम हो गया है और सबसे अधिक संख्या दाल मिलों की है जिसमें ७०% भागीदारी राजस्थानी समाज की है, इसके अलावा तेल मिल किराणा का होलसेल की बहुत बड़ी व्यापार मंडी है। यहां के लोगों की आय का मुख्य स्रोत कृषि एवं व्यापार पर निर्भर है। अकोला को शिक्षा व मेडिकल के क्षेत्र में उच्च स्थान प्राप्त है। आज यहां लगभग १२-१३ डिग्री कॉलेज हैं, जिनमें कॉमर्स,आर्ट्स, लॉ जैसे कई संकाय हैं। पर्यटन की दृष्टि से भी यह क्षेत्र उत्तम है। यहां सबसे प्रमुख मंदिर है गजानन महाराज जी का, साथ ही सालासर जी का भी मंदिर बना हुआ है। अकोला में राजस्थानी समाज की स्थिति बहुत ही उत्तम है। यहां अग्रवाल समाज के ३५००, माहेश्वरी समाज के २२०० और ब्राह्मण समाज के २००० व अन्य समाज के मिलाकर १२०० के करीब परिवार हैं। यहां के राजस्थानी समाज द्वारा राधा देवी गोयंका महाविद्यालय का निर्माण किया गया है जहां वर्तमान में लगभग ३,००० बालिका शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। यहां दो अग्रसेन भवन भी बनाए गए हैं जिसमें पहला अग्रसेन भवन १९६८ में बनाया गया व दूसरा अग्रसेन भवन २००२ में बनाया गया। यह दोनों ही भवन पूर्णत: सुविधायुक्त भव्य रूप में बने हुए हैं। यहां का राजस्थानी समाज राजनीति में भी सक्रिय है यहां कई विधायक हुए हैं जो अपने कार्यों के माध्यम से राजस्थानियों को गौरवान्वित करते रहे हैं, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'अकोला' की...

वसंत जी मूलतः राजस्थान स्थित 'चिड़ावा' के निवासी हैं। आपका जन्म १९५१ में 'चिड़ावा' में हुआ। आपकी संपूर्ण शिक्षा 'अकोला' में संपन्न हुई है। यहां आप सोयाबीन तेल की फैक्ट्री के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। १९३७ में निर्मित विदर्भ चेंबर ऑफ कॉमर्स इंडस्ट्रीज के अध्यक्ष रहे हैं। अग्रसेन नागरिक सहकारी बैंक के पिछले २२ वर्षों से अध्यक्ष पद पर सेवारत हैं। महाराजा अग्रसेन भवन ट्रस्ट के अध्यक्ष पद पर सेवारत हैं, अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं।

'भारत को 'भारत' की बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, यही हमारे देश की मूल पहचान है।

सीए रमेश चौधरी
अध्यक्ष श्री ओसवाल ट्रस्ट अकोला
बाबरा (पाली) निवासी-अकोला प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४२२१६०४३०

रमेश जी अपनी कर्मभूमि 'अकोला' के संदर्भ में कहते हैं कि 'अकोला' भारत के बीचो बीच स्थित है और यह रेलवे जंक्शन होने के कारण भारत के बड़े शहरों में यहां से कम समय में, कम तकलीफ तथा कम से कम रेल बदलकर आसानी से जाया जा सकता है। यहां की औद्योगिक स्थिति की बात की जाए तो यह कपास उद्योग के लिए हमेशा से ही प्रसिद्ध रहा है पर अब उसका उत्पादन कम हो चुका है, उसके स्थान पर सोयाबीन, कॉटन, कॉटन सीड्स ऑयल, एडिबल ऑयल ने ले लिया है और इन आयल मिलो में तेल निकालने के बाद बची हुए वेस्टेज से खली का उत्पादन भी बड़े पैमाने पर होता है, जो देश ही नहीं विदेशों के पोल्ट्री फॉर्म में भी भेजा जाता है, साथ ही तुअर दाल, चना दाल, मुंग, उडद व मोगर के लिए मुख्य केंद्र है। यहां से देश के विभिन्न भागों में दाल का निर्यात होता है। यहां लगभग डेढ़ सौ दाल मिलें हैं। शिक्षा के लिए आज यह हब बनता जा रहा है। महाराष्ट्र के चार कृषि विश्वविद्यालय में से एक विश्वविद्यालय डॉ. पंजाबराव देशमुख कृषि विश्वविद्यालय अकोला में ही स्थापित है। यहां मेडिकल इंजीनियरिंग के भी बड़े-बड़े इंस्टिट्यूट है साथ ही सीए की कोचिंग के लिए दूर-दूर से विद्यार्थी यहां आते हैं। भारत में सीए की रैंकिंग के लिए 'अकोला' विशेष रूप से जाना जाता है। महाराष्ट्र सीड्स कारपोरेशन लिमिटेड का हेड क्वार्टर भी अकोला में ही स्थित है। पर्यटन की बात की जाए तो यहां का राजराजेश्वर मंदिर, सालासर बालाजी मंदिर, सुंदराबाई खंडेलवाल क्लॉक टॉवर, नरनाला फोर्ट, काटेपूरणा डैम, शेगांव में गजानन महाराज मंदिर तथा विश्व विख्यात प्राकृतिक लोणार झील, शिरपुर जैन सिद्ध क्षेत्र, बालापुर जैन मंदिर आदि प्रमुख स्थान 'अकोला' के पास स्थित है, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'अकोला' की...

रमेश जी मूलतः राजस्थान के पाली जिले में स्थित बाबरा गांव के निवासी हैं। आपके दादाजी के समय आपका परिवार अकोला स्थित 'सावरगांव' में आकर बसा। आपका जन्म व प्रारंभिक शिक्षा 'सावरगांव' में ही संपन्न हुई है। उच्च शिक्षा आपने 'अकोला' से ग्रहण की, तत्पश्चात नागपुर से सीए की ट्रेनिंग ली व सीए फाइनल आपने मुंबई से किया। कई क्षेत्रों में कार्यरत रहने के पश्चात १९८७ को स्वयं की सनदी लेखाकार की संस्था स्थापित की, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। सन्मित्र अर्बन कोऑपरेटिव बैंक में पिछले १५ वर्षों से वाइस चेयरमैन के रूप में कार्यरत हैं, साथ ही ओसवाल ट्रस्ट अकोला के अध्यक्ष पद पर सेवारत हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम केवल भारत ही रहना चाहिए, क्योंकि यह देश भरत चक्रवर्ती का है और उनके नाम से ही इस देश का नाम 'भारत' जाना जाता रहा है। अंग्रेजों व मुगलों के पूर्व हमारे देश का नाम 'भारत' ही रहा है और यही रहना चाहिए।

कोई भी राजनीतिक कारण कितने ही प्रबल क्यों न हों, 'हिन्दी' भाषा के इस उत्थान में आड़े आने नहीं देना चाहिए - बिजय कुमार जैन

सुशीला गांधी
संस्थापिका माहेश्वरी महिला मंडल अकोला
पोखरण निवासी-अकोला प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९५६१६१३०६९

सुशीला जी अपनी कर्मक्षेत्र 'अकोला' के संदर्भ में कहती हैं कि 'अकोला' एक बहुत ही सुंदर स्थान है, यहां सभी समाज के लोग बसे हुए हैं, सभी में सहयोगी प्रवृत्ति विद्यमान है। यहां की आर्थिक स्थिति की बात की जाए तो यह कृषि प्रधान क्षेत्र है। अतः यहां गेहूं, गन्ना, ज्वारी, बाजरा जैसी कई फसलों की पैदावार बड़े पैमाने पर होती है। शिक्षा व स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह बहुत ही उत्तम स्थान है। यहां राजस्थानी समाज में अग्रवाल, माहेश्वरी, जैन ब्राह्मण सभी का निवास है। सभी के बीच आपसी सामंजस्य बहुत ही उत्तम है। सभी द्वारा यहां विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम संपन्न किए जाते हैं। १९६२ में यहां महेश्वरी मंडल का निर्माण किया गया, तब से यहां महिला मंडल सक्रिय है। प्रारंभ में यह संस्था मात्र ३ महिलाओं द्वारा संचालित थी जिसमें स्व. श्रीमती बसंती बाई झंवर जी, स्व. श्रीमती शांता बाई राठी जी व मैं कार्यरत थीं, आज माहेश्वरी महिला मंडल में १००० से अधिक महिलाएं कार्यरत हैं, जिनके द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक, सामाजिक कार्यक्रम व पिकनिक आदि का भी आयोजन समय-समय पर किया जाता है, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'अकोला' की...

सुशीला जी मूलतः राजस्थान के 'पोखरण' की निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा मनकापुर में संपन्न हुयी है, आपके पति कृष्ण गोपाल गांधी जी मुख्य प्राध्यापक के रूप में सेवारत थे। आपने भी इतिहास व समाजशास्त्र से स्नातकोत्तर की शिक्षा प्राप्त की, आप राजस्थानी महिला मंडल व माहेश्वरी महिला मंडल में सक्रिय हैं, साथ ही अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़ी हुई हैं। अकोला तक ही कार्यक्षेत्र को सीमित न रखते हुए विदर्भ माहेश्वरी महिला संगठन की कार्यसमिति सदस्य तथा सचिव व अखिल भारतीय महिला संगठन की कार्यकारिणी सदस्य तथा उपाध्यक्ष पद की जिम्मेदारी संभाली। इनके नेतृत्व में ही अकोला में ही विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी महिला सम्मेलन तथा अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन का द्वितीय सम्मेलन बड़ी सफलतापूर्व आयोजित हुआ। कई बार सम्मानित हुई अखिल भारतीय महिला संगठन न रजत पदक देकर नवाजा। अखिल भारतीय राजस्थानी महिला मंडल ने नागपुर में सक्रिय कार्यकर्ता का पुरस्कार दिया, जे.सी.आई,न्यू प्रियदर्शनी एवं वुमन भास्कर क्लब की ओर पुरस्कृत किया गया, माहेश्वरी महिला मंडल की ओर से स्वर्ण महोत्सव में स्वर्णिम आभा के रूप में सम्मानित हुई। अकोला माहेश्वरी महिला मंडल पर भारत में स्वर्ण महोत्सव मनाने वाला प्रथम मंडल है जिसकी नीव अपने ही रखी।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, यही हमारी वास्तविक पहचान है।

डॉ. राधाकिशन अटल
सेवानिवृत्त वैद्यकीय अधिकारी
नागौर निवासी-अकोला प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४२१७५७९२२

डॉ. राधाकिशन जी अपनी कर्मभूमि 'अकोला' के संदर्भ में कहते हैं कि 'अकोला' एक बहुत ही सुंदर शहर है। यहां के आराध्य देव राजराजेश्वर जी हैं जो शिवजी का पुरातन और ऐतिहासिक मंदिर है। यहां से ७० किलोमीटर दूरी पर स्थित है चिकलधारा, जो पर्यटन स्थल के रूप में जाना जाता है। 'अकोला' एक कृषि प्रधान क्षेत्र है, पर यहां के अधिकतर लोग प्रोफेशन व्यवसाय से जुड़े हुए हैं। यहां अधिकतर व्यवसाय एमआईडीसी क्षेत्र में अधिकृत है। अकोला में एरोड्रम भी है जिसका निर्माण कई वर्ष पूर्व किया गया था, पर इसका विस्तार नहीं हो पाया, इसके लिए सरकार द्वारा प्रयास जारी है। यह जंक्शन होने के कारण मराठवाड़ा के लिए जाने वाली हर ट्रेन यहां से होकर जाती है। अकोला से ५० कि. मी.पर शेगांव नगरी है जो कि विदर्भ की पंढरी कही जाती है, श्री संत श्रेष्ठ गजानन महाराज के नाम से प्रचलित हैं। विदर्भ के गावों से रोज २५ से ३० हजार लोग आकर संत श्रेष्ठ का दर्शन कर मुफ्त भोजन प्रसाद ग्रहण करते है। यहां के राजस्थानी समाज की स्थिति अति उत्तम है। सभी उच्च क्षेत्र में कार्यरत हैं, साथ ही सामाजिक धार्मिक व राजनीतिक क्षेत्रों में भी सक्रिय हैं, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'अकोला' की...

डॉ. राधाकिशन जी का जन्म 'अकोला' के समीप कटेपूरणा डैम के पास 'मोरगांव काकड़' में हुआ। मूलतः आपका परिवार राजस्थान स्थित नागौर जिले में स्थित 'गारसनी' का निवासी है। अकोला शहर में आप ६५ वर्षों से निवासी हैं, आपकी कर्मभूमि 'अकोला' ही है, आपने चिकित्सा क्षेत्र में क्लास वन मेडिकल ऑफिसर के पद सेवानिवृत्ति ली है, वर्तमान में सत्य साईं सेवा मेडिकल ऑर्गेनाइजेशन से जुड़े हैं। आप स्वयं बचपन से पोलियो द्वारा विकलांग एवं मध्यम परिवार से होकर स्वबल से वैद्यकीय शिक्षा ग्रहण कर, सरकारी सेवा से निवृत्त होने के उपरांत 'पैसा ही सब कुछ नही हैं, देश का, गाँव का, समाज का मुझे कुछ रूण चुकाना है'। इस संकल्प को ध्यान मे रखते हुये स्वयं पुथ्थपर्थी श्री सत्य साई बाबा का भक्त होने के कारण, स्वामी का जो बोधवाक्य है 'मानव सेवा हिच खरी माधव सेवा' ध्यान मे रखकर, निशुल्क वैद्यकीय सेवा, मुफ्त औषधि, मार्गदर्शन, अन्नदान, वस्त्र दान, नारायण सेवा, आखों की शस्त्र क्रिया, दुर्धर हृदय विकार शस्त्र क्रिया उच्च स्तरीय यज्ञ द्वारा जांच कराकर सेवा भावी संस्थाओ का सहभाग लेकर निशुल्क सेवा सिर्फ आदिवासी, निर्धन परिवार को प्रदान कि जाती है, दुर्गम आदिवासी इलाकों में शिबिर लिये जाते है। समाज में संस्कार, संस्कृति, शिक्षा प्रबंधन का कार्य करता है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम केवल भारत ही रहना चाहिए, भारत नाम ही हमारी संस्कृति और गौरवशाली इतिहास को दर्शाता है।

देश की शान, हिंदी है महान-बिजय कुमार जैन

चंद्रकांत भैय्या
व्यवसाई व समाजसेवी
फलोदी निवासी-अकोला प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९९२२४४८२२९

चंद्रकांत जी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'अकोला' के संदर्भ में कहते हैं, 'अकोला' एक बहुत ही सुंदर स्थान है। यहां से कुछ किलोमीटर दूरी पर स्थित है 'शेगांव', जहां महाराष्ट्र के प्रसिद्ध गजानन महाराज जी का मंदिर है, बहुत ही विशाल व भव्य रुप में बना हुआ है। 'अकोला' की आर्थिक स्थिति की बात की जाए तो यह कपड़ा, किराणा मार्केट के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। यहां किराणा का सबसे बड़ा व्यापार केंद्र है। जहां से वस्तुओं का निर्यात देश के अन्य भागों में भी किया जाता है, यहां सभी समाज के लोग आपसी मेल-मिलाप के साथ रहते हैं। राजस्थानी समाज की आबादी लगभग एक लाख के करीब है। शिक्षा व चिकित्सा की यहां व्यवस्था बहुत ही उत्तम है। यहां कई बड़े-बड़े प्रतिष्ठान शिक्षा व स्वास्थ्य के दिशा में सक्रिय हैं। ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'अकोला' की...

चंद्रकांत जी मूलतः राजस्थान स्थित जोधपुर जिले में स्थित 'फलोदी' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'अकोला' के सेलार में संपन्न हुई है। 'अकोला' में प्लाईवुड के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही यथासंभव सामाजिक कार्य में भी सक्रिय रहते हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि यह बहुत ही अच्छा अभियान है, अपने देश का नाम तो एक ही होना चाहिए सिर्फ 'भारत'!

श्रीमती कृष्णा पाड़िया
अध्यक्ष अग्रवाल महिला मंडल अकोला
नवलगढ निवासी-अकोला प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९८५०३२३०३९

कृष्णा जी अपनी कर्मभूमि 'अकोला' के संदर्भ में कहती हैं कि 'अकोला' शहर सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक व अपने मौलिक तत्व को आज भी संजोए हुए है। 'अकोला' अपनी कई विशेषताओं के लिए जाना जाता है। यहां की आर्थिक स्थिति बहुत ही उत्तम है, यह कृषि प्रधान क्षेत्र हैं। शिक्षा व मेडिकल के क्षेत्र में आज यहां विशेष रूप से प्रगति हुई है। पर्यटन की दृष्टि से बात की जाए तो यहां कई देवस्थान हैं। यहां शिव जी का सबसे पुरातन मंदिर 'राजराजेश्वर' है, साथ ही राजस्थानी समाज द्वारा राणी सती मंदिर, श्याम बाबा जी का मंदिर, सालासर जी का मंदिर जैसे कई मंदिरों व सामाजिक संस्थाओं का निर्माण किया गया है। यहां अग्रवाल समाज की महिला सामाजिक व धार्मिक क्षेत्रों में विशेष रूप से सक्रिय हैं अन्य कई विशेषताएं और भी हैं 'अकोला' की...

कृष्णा जी मूलतः राजस्थान स्थित नवलगढ़ की निवासी हैं। आपका जन्म व शिक्षा इंदौर में संपन्न हुई है। पिछले ३५ वर्षों से आप 'अकोला' में बसी हुई हैं और विभिन्न सामाजिक कार्यों में सक्रिय हैं। अग्रवाल महिला मंडल की सचिव, कोषाध्यक्ष व उपाध्यक्ष रही हैं। वर्तमान में अध्यक्ष पद पर सेवारत हैं। आपके पति अनिलजी भी व्यवसाय के साथ-साथ सामाजिक क्षेत्रों में सक्रिय हैं, अनिल जी अग्रवाल समाज के कोषाध्यक्ष के रूप में सेवारत हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए।

रविंद्र भंसाली
वरिष्ठ उपाध्यक्ष अकोला जिला माहेश्वरी संगठन
नागौर निवासी-अकोला प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९४२२१६१०३९

रविंद्र जी अपनी कर्मभूमि 'अकोला' के संदर्भ में कहते हैं कि 'अकोला' एक कृषि प्रधान क्षेत्र है। यहां की आर्थिक स्थिति कृषि पर ही निर्भर है। विदर्भ में नागपुर के बाद अकोला का ही स्थान प्रमुख है, यहां विशेषकर तुअर दाल व सोयाबीन की फसल सबसे अधिक होती है, जिसका निर्यात देश के अन्य भागों में भी किया जाता है। शिक्षा व चिकित्सीय सुविधाएं यहां बहुत ही उत्तम है। शिक्षा व चिकित्सा के लिए यहां कई बड़े व प्रतिष्ठित संस्थान सेवारत हैं। यहां का प्रमुख मंदिर है राजराजेश्वर मंदिर, जो यहां के आराध्य देव कहे जाते हैं, साथ ही यहां से देश के किसी भी भाग में आसानी से जाया जा सकता है। यहां राजस्थानी समाज में अग्रवाल, माहेश्वरी, जैन, ब्राह्मण सभी समाज के लोग बसे हुए हैं, सभी के बीच आपसी सामंजस्य बहुत ही उत्तम है। 'अकोला' शहर में माहेश्वरी समाज के लगभग २००० परिवार निवास करते हैं, ऐसी अन्य कई विशेषताएं हैं हमारे 'अकोला' की...

रविंद्र जी मूलतः राजस्थान स्थित 'किशनगढ़' जिले के नौसल कोठड़ी गांव के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा अकोला में ही संपन्न हुई है। पिछले ३० वर्षों से आप 'अकोला' में बसे हुए हैं और ऑटोमोबाइल के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। अकोला जिला माहेश्वरी संगठन के उपाध्यक्ष हैं, अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं। अर्धांगिनी सौ मनीषा रवींद्र भन्साली अकोला महानगरपालिका में एकमेव माहेश्वरी समाज की एकमेव नगरसेविका चुनकर आई है और महिला बालकल्याण सभापती का कार्यकाल संभाला है

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए।

यदि बढ़ाना है देश को विकास की ओर, तो दें हिंदी भाषा पर जोर-बिजय कुमार जैन

रमाकांत खेतान
कार्याध्यक्ष महाराष्ट्र राज्य अग्रवाल सम्मेलन
बगड़ निवासी-अकोला प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९८२३०४३२०१

रमाकांत जी अपनी कर्मभूमि 'अकोला' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'अकोला' विदर्भ का एक प्रमुख व्यापारिक केंद्र है जो विशेषकर कृषि पर आधारित है, यह कृषि प्रधान क्षेत्र है। यहां दाल, तेल, कपास का उत्पादन बड़े पैमाने पर होता है। यहां के व्यापारी क्षेत्र में राजस्थानी समाज का विशेष वर्चस्व स्थापित है। यह क्षेत्र होलसेल किराना अनाज बाजार के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। यहां राजस्थानी समाज की संख्या लगभग २० हजार के करीब है, जिनमें अग्रवाल, माहेश्वरी, जैन, ब्राह्मण सभी समाज के लोग आते हैं। यहां राजस्थानियों द्वारा विभिन्न सामाजिक व धार्मिक संस्थाएं संचालित की जा रही हैं, इनमें से प्रमुख राजस्थानी सेवा संघ, अकोला जनता कमर्शियल कोऑपरेटिव बैंक, अकोला अर्बन कॉपरेटिव बैंक विशेष रूप से सक्रिय है। शिक्षा व स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है। यहां इंजीनियरिंग मेडिकल व अन्य प्रमुख महाविद्यालय हैं। स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए कई बड़े और विशेष अस्पताल हैं। यहां सभी धर्म समाज के लोग बसे हैं, सभी के बीच आपसी सामंजस्य बहुत ही उत्तम है, सभी अपनी मातृभूमि व कर्मभूमि से जुड़े हैं, विशेषकर यह हिंदी भाषी क्षेत्र है क्योंकि १९६० के पहले यह क्षेत्र मध्य प्रदेश के अंतर्गत आता था, बाद में यह महाराष्ट्र का हिस्सा बना। 'अकोला' में कई दर्शनिय स्थल हैं, जिनमें शेगांव का गजानन महाराज का मंदिर, राजेश्वर मंदिर शिव जी का, अंतरिक्ष पार्श्वनाथ जो यहां से ६० किलोमीटर दूरी पर स्थित है, ऐसे ही अनेक प्रमुख स्थल हैं जो 'अकोला' की शोभा को बढ़ाते हैं।

रमाकांत जी मूलतः राजस्थान के 'झुंझुनू' जिले में बगड़ के निवासी हैं। आपका परिवार सन् १९१० से अकोला में बसा हुआ है। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'अकोला' में ही संपन्न हुयी है। यहां आप पेट्रोलियम, शुगर और कंस्ट्रक्शन के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही कई सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं फेडरेशन ऑफ अर्बन को.ओ. बैंक में भी सक्रिय हैं। अकोला जनता कमर्शियल कोऑपरेटिव बैंक के अध्यक्ष रहे हैं। फेडरेशन ऑफ अर्बन कोऑपरेटिव बैंक महाराष्ट्र के उपाध्यक्ष रहे हैं। अकोला की व्यापारिक संस्था होलसेल व किराना अनाज मार्केट के भी अध्यक्ष रहे हैं, जिसके अंतर्गत २५० दुकाने आती हैं। महाराष्ट्र राज्य अग्रवाल सम्मेलन के कार्याध्यक्ष के रूप में सेवारत हैं,अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए। मैं बिजय कुमार जैन जी के 'भारत नाम सम्मान' इस अभियान का पूर्ण समर्थन करता हूं।

शांतिलाल भाला
उपाध्यक्ष दाल मिल एसोसिएशन
अकोला महाराष्ट्र
भ्रमणध्वनिः ९४२२१६११९८

शांतिलाल जी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'अकोला' के संदर्भ में कहते हैं कि 'अकोला' विदर्भ का एक प्रमुख क्षेत्र है, संपूर्ण विदर्भ की मिट्टी उपजाऊ है इसीलिए 'अकोला' एक कृषि प्रधान क्षेत्र है, यहां के लोगों के आय-व्यय का स्रोत, भरण-पोषण कृषि पर ही निर्भर है। यहां के अधिकतर व्यापार उद्योग कृषि पर ही आधारित हैं, यहां सबसे अधिक संख्या दाल मिलों की है, शिक्षा व मेडिकल के क्षेत्र में यहां पिछले १०-१५ वर्षों में बहुत प्रगति हो गई है। आज यह शिक्षा का केंद्र बन चुका है, विशेषकर सीए की कोचिंग के लिए कई स्थानों पर सैकड़ों की संख्या में विद्यार्थी यहां आते हैं क्योंकि यहां के परिणाम भी बहुत ही उत्तम होते हैं, साथ ही यहां कई हॉस्पिटल भी कार्यरत हैं। यहां हर क्षेत्र के विशेषज्ञ डॉक्टर उपलब्ध हैं। राजस्थानी समाज में यहां अग्रवाल, माहेश्वरी, खंडेलवाल, ब्राह्मण सभी समाज के लोग बसे हुए हैं, सभी समाज की एक प्रमुख संस्था है राजस्थानी सेवा संघ, जिसके द्वारा यहां समय-समय पर विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम संपन्न किए जाते हैं। दीपावली स्नेह मिलन का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया जाता है, जिसमें सभी राजस्थानी भाई उत्साहपूर्वक सम्मिलित होते हैं। पर्यटन की दृष्टि से 'अकोला' का शेगांव गजानन महाराज जी के मंदिर के लिए प्रसिद्ध है, साथ ही सालासर जी का भी मंदिर बना हुआ है, इसके अलावा अन्य कई भव्य और विशेष मंदिर हैं जो देखने योग्य हैं, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'अकोला' की...

शांतिलाल जी के पूर्वज मूलतः राजस्थान के 'कालाडेरा' के निवासी हैं, आपका परिवार लगभग १२५ वर्षों से 'अकोला' में बसा हुआ है। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'अकोला' में ही संपन्न हुई है। आपका संयुक्त परिवार है और आपके परिवार की लगभग १५ दाल मिल्स हैं। आप यहां सामाजिक क्षेत्रों में भी विशेष रूप से सक्रिय हैं। माहेश्वरी समाज ट्रस्ट के उपाध्यक्ष के पद पर सेवारत है, पूर्व सचिव भी रहे हैं। दाल मिल्स एसोसिएशन के उपाध्यक्ष हैं, जिसके अंतर्गत लगभग २५० दाल मिले हैं, साथ ही आप कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए।

हर भारतीयों का है आव्हान
भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए

आओ मिलकर हिंदी का सम्मान करें 'हिंदी' को राष्ट्रभाषा का सम्मान दिलाने की प्रतिज्ञा करें -बिजय कुमार जैन 'हिंदी सेवी'

नरेश बियाणी
उपाध्यक्ष अकोला इंडस्ट्रीज एसोसिएशन
नागौर निवासी-अकोला प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४२२१६०१९१

नरेश जी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'अकोला' के संदर्भ में कहते हैं कि 'अकोला' स्वतंत्रता सेनानियों की भूमि है। यहां कई महापुरुषों ने जन्म लिया है। 'अकोला' की आर्थिक स्थिति की बात की जाए तो यहां कपास, किराणा का व्यापार सबसे अधिक होता था, पर अब कपास का कारोबार कम हो चुका है। वर्तमान में यहां दाल मिल्स की संख्या सबसे अधिक है और इनमें ८०% राजस्थानी समाज सक्रिय हैं। शिक्षा के क्षेत्र में भी अकोला सर्वोत्तम है, यह सीए के कोचिंग के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। नागपुर व अन्य क्षेत्रों से भी लोग शिक्षा ग्रहण करने के लिए यहां आते हैं। चिकित्सा के क्षेत्र में भी यह उत्तम है, यहां हर क्षेत्र के विशेषज्ञ चिकित्सक मिलेंगे। आज यहां शिक्षा व स्वास्थ्य के लिए कई सामाजिक व निजी प्रतिष्ठान कार्यरत हैं। अकोला में राजस्थानी समाज की संख्या सबसे अधिक है, अतः यहां अग्रवाल, माहेश्वरी, जैन सभी समाज भवन बने हुए हैं। यहां सभी पर्व होली, दिवाली भव्य रुप में मनाए जाते हैं। यहां राजस्थानी समाज द्वारा सालासर हनुमान मंदिर, बिरला जी का राम मंदिर जैसे कई मंदिरों का निर्माण किया गया है। पर्यटन की बात की जाए तो यहां से ४५ किलोमीटर दूरी पर स्थित है गजानन महाराज जी का मंदिर, जो महाराष्ट्र के प्रमुख मंदिरों में से एक है। दूसरा प्रमुख स्थान है चिकलधारा, जो यहां से ९० किलोमीटर दूरी पर स्थित एक हिल स्टेशन है। लगभग ७० किमी की दूरी पर स्थित है शिरपुर जैन सिद्धक्षेत्र, अन्य कई और भी प्रमुख स्थान हैं अकोला में...

नरेश जी मूलत: राजस्थान स्थित 'भाकरी' के निवासी हैं जो पुष्कर के करीब है। आपका जन्म व शिक्षा 'अकोला' में ही संपन्न हई है, यहां आप दाल मिल्स व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। अकोला इंडस्ट्रीज एसोसिएशन के उपाध्यक्ष हैं, दाल मिल्स एसोसिएशन के कार्यकारी सदस्य व माहेश्वरी समाज ट्रस्ट के ट्रस्टी के रूप में भी सेवारत हैं।

गिरीश अग्रवाल
अध्यक्ष अग्रसेन भवन ट्रस्ट
सिंघाना निवासी-अकोला प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४२२१६०४८७

गिरीश जी अपनी कर्मभूमि 'अकोला' के संदर्भ में कहते हैं कि 'अकोला' को कॉटन सिटी के नाम से जाना जाता था, यहां कपास का उत्पादन अधिक पैमाने पर होता था, पर अब उसका स्थान दाल मिल्स और ऑयल मिल्स ने ले लिया है। यहां दाल की प्रोसेसिंग के कई कारखाने हैं और साथ ही यहां कई छोटे-छोटे प्लांट्स भी लगे हैं। गुजरात अंबुजा का भी प्लांट यहां लगा हुआ है। यहां औद्योगिक क्षेत्र का भी विकास हो सकता है, जो राजनीति असहयोग के कारण नहीं हो पाया है। मुंबई नागपुर का मुख्य केंद्र है 'अकोला'। लगभग ३० वर्ष पूर्व एयरपोर्ट का भी निर्माण किया गया था पर रनवे विस्तार के अभाव में बंद पड़ा है। सरकार इसके लिए प्रयासरत है, यदि यह एयरपोर्ट चालू हो गया तो यहां औद्योगिक क्षेत्र में विशेष प्रगति आएगी। शिक्षा व चिकित्सा के क्षेत्र में भी यहां बहुत प्रगति हुई है, यहां गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज इंजीनियरिंग कॉलेज जैसे कई संकाय के महाविद्यालय हैं। यहां से शिक्षा प्राप्त कर छात्र अन्य स्थानों पर रोजगार के लिए चले जाते हैं, क्योंकि यहां स्कोप कम है। 'अकोला' शहर एक ऐतिहासिक शहर है, इसका अपना इतिहास है, यहां के आराध्य देव राजराजेश्वर जी हैं, साथ ही कई प्रमुख व ऐतिहासिक स्थान है जो अकोला को और भी सुंदर बनाते हैं।

गिरिश जी मूलतः राजस्थान स्थित 'सिंघाना' के निवासी हैं। आपका जन्म मुंबई में व संपूर्ण शिक्षा 'अकोला' में संपन्न हुई है। यहां आपके पिताजी पहले से ही बसे हुए थे, यहां आप पूर्व में फार्मेसी डिस्ट्रीब्यूटर के व्यवसाय से जुड़े रहे। वर्तमान में पूर्णत: समाज सेवा में सक्रिय हैं। वर्तमान में संत तुकाराम हॉस्पिटल मेडिकल सेंटर के चेयरमैन के रूप में कार्यरत हैं, अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, भारत नाम हमारे देश की वास्तविक पहचान है।

राजेंद्र बाहेती
समाजसेवी
मुंजाल (नागौर) निवासी-अकोला प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९९७५०४४००६

राजेंद्र जी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'अकोला' के संदर्भ में कहते हैं कि 'अकोला' एक कृषि प्रधान क्षेत्र है, जहां सबसे अधिक उत्पादन कपास का होता था पर अब यह उत्पादन कम हो चुका है उसका स्थान सोयाबीन ने ले लिया है, अब सोयाबीन का उत्पादन सबसे अधिक होता है, साथ ही यहां दाल की कई मिल्स हैं। शिक्षा व स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है। यहां कई कोचिंग क्लासेस चलते हैं, यहां के विद्यार्थी सीए, डॉक्टर, इंजीनियर जैसे विभिन्न विशिष्ट पदों पर सेवारत हैं। यहां राजस्थानी समाज में माहेश्वरी, अग्रवाल, ब्राह्मण, खंडेलवाल, ओसवाल सभी समाज के लोग बसे हुए हैं, सभी का आपसी सामंजस्य बहुत ही अच्छा है। यहां राजस्थानी समाज के तीन विधायक भी हैं जो अपने-अपने कार्य कर रहे है। यहां राजस्थानी समाज के लोग सामाजिक व धार्मिक क्षेत्रों में सक्रिय है। विदर्भ चेंबर ऑफ कॉमर्स, बेरार जनरल एजुकेशन सोसाइटी में विशेषकर राजस्थानी समाज ही सक्रिय हैं। यहां के प्रमुख दर्शनीय स्थलों में ऐतिहासिक राजराजेश्वरी मंदिर, असदगढ़ विशेष रूप से उल्लेखनीय है। मोहता **शेष पृष्ठ ३२ पर...**

पृष्ठ ३१ से... मिल्स के प्रांगण में मातृ भक्त तपे हनुमान जी का मंदिर है, कहते हैं कि यहां हर मन्नत अवश्य पूरी होती है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'अकोला' की...

राजेंद्र जी मूलतः राजस्थान के नागौर जिले में स्थित 'मुंदीयाड' गांव के निवासी हैं, आपका परिवार कई वर्षों से 'अकोला' में बसा हुआ है। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा 'अकोला' में ही संपन्न हुई है। यहां आप व्यवसायिक क्षेत्र में कार्यरत हैं, विशेषकर आप सामाजिक क्षेत्र में विशेष रूप से सक्रिय हैं। १९७८ में विद्यार्थी संघ के अध्यक्ष भी रहे हैं। ४५ सालों से सामाजिक कार्य व सामाजिक विषयों पर लेखन के क्षेत्र से जुड़े हुए हैं, जनहितार्थ कार्य के लिए आप सदैव तत्पर रहते हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, यही हमारे देश का मूल नाम है और हमारे इतिहास और संस्कृति को दर्शाता है।

समीप जैन
राज्य कार्यकारिणी सदस्य भारतीय जैन संगठन
अकोला
भ्रमणध्वनि: ९३७२२९२४७७

समीप जी अपनी कर्मभूमि 'अकोला' के संदर्भ में कहते हैं कि अकोला कॉटन सिटी के नाम से जाना जाता है। पहले यहां कपास का उत्पादन बड़े पैमाने पर होता था पर अब इसका उत्पादन कम हो गया है, उसका स्थान तुअर दाल और सोयाबीन में ले लिया है। अकोला की पहचान कपास उद्योग और यहां के डॉ. पंजाबराव कृषि विद्यापीठ के कारण विशेष रूप से है। यह मध्य भारतीय रेलवे का मुख्य क्षेत्र है, यहां विभिन्न धर्म और समाज के लोग बसे हुए हैं विशेषकर यह हिंदी भाषी क्षेत्र के रूप में जाना जाता है क्योंकि यह मध्य प्रदेश की सीमा से लगा हुआ है। पहले की तुलना में यहां का विकास बहुत तेजी से हो रहा है। यहां शिक्षा व चिकित्सा के क्षेत्र में विशेष प्रगति हुई है, शिक्षा का यह हब बनते जा रहा है। यहां आईटीआई, एनआईटी, सीए की कोचिंग के कई सेंटर हैं, जिसके लिए देश के विभिन्न क्षेत्रों से लोग यहां आते हैं। चिकित्सा के क्षेत्र में नागपुर के बाद यह मुख्य केंद्र है। आसपास के लोग चिकित्सा सुविधाओं के लिए यहां बड़े पैमाने पर आते हैं। यहां हर क्षेत्र के विशेषज्ञ कार्यरत हैं। यहां के पर्यटन स्थिति की बात की जाए तो यहां शंकर जी का मंदिर प्राचीन राजराजेश्वर विशेष रूप से उल्लेखनीय है, यहां कई मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, पारसी अग्यार और चर्च भी हैं। यहां से कुछ किलोमीटर पर दूरी पर स्थित 'नरनाला' किला है जहां वार्षिक उत्सव बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। महान गांव में काटेपूरणा डैम है जो पर्यटन के लिए विशेष रूप से जाना जाता है, ऐसी ही अन्य कई विशेषताएं हैं हमारे 'अकोला' की...

समीप जी मूलतः महाराष्ट्र के अमरावती जिले के निवासी हैं। पिछले ४५ वर्षों से अकोला में बसे हुए हैं और कंप्यूटर व प्रिंटिंग प्रेस के व्यवसाय से जुड़े हैं। आप सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। भारतीय जैन संगठना के राज्य कार्यकारिणी सदस्य है तथा स्मार्ट गर्ल विषय के प्रशिक्षक एवं अल्पसंख्याक विषय तज्ञ है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए।

अनंत आगरकर जैन
जिला अध्यक्ष अखिल भारतीय दिगम्बर जैन सैतवाल संस्था
दर्यापुर अमरावती निवासी-अकोला प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९५२७३६६३८३

अनंत जी मूलतः महाराष्ट्र के अमरावती जिले में स्थित 'दर्यापुर' के निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। पिछले २७ वर्षों से 'अकोला' के जूनियर कॉलेज में इलेक्ट्रिकल संकाय के प्रवक्ता के रूप में कार्यरत हैं। व्होकेशनल कोर्स NCERT भोपाल द्वारा सन २००८ में बेस्ट प्रोफेशनल शिक्षक का सम्मान भी आपके नाम है। आप सामाजिक कार्य में भी विशेष रुप से सक्रिय रहते हैं। अकोला जिले में होने वाले विभिन्न धार्मिक कार्य व पंचकल्याणक महोत्सव में सूत्र संचालन करते हैं। दिगम्बर समाज में होने वाले वर-वधू सम्मेलन में भी मुख्य भूमिका निभाते हैं। अखिल भारतीय दिगम्बर सैतवाल संस्था अकोला जिले के अध्यक्ष के रूप में सेवारत हैं, साथ ही भारतीय जैन संगठना के भी अध्यक्ष रहे हैं, अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं।

अनंत जी अपनी कर्मभूमि 'अकोला' के संदर्भ में कहते हैं कि 'अकोला' कृषि प्रधान क्षेत्र है। यहां की आर्थिक स्थिति कृषि पर ही आधारित है, यह मध्य विदर्भ का प्रमुख केंद्र है, यहां की शैक्षणिक व चिकित्सकीय प्रणाली बहुत ही उत्तम है। यहां कई विशेषज्ञ डॉक्टर हैं। अन्य क्षेत्रों से भी मरीज यहां इलाज के लिए आते हैं। शिक्षा के लिए यहां कई बड़े-बड़े शैक्षणिक प्रतिष्ठान सतत सक्रिय हैं। महाराष्ट्र के कृषि विद्यापीठ में से डॉ. पंजाबराव कृषिविद्यापीठ 'अकोला' में स्थापित है। यहां सभी समाज के लोग आपसी प्रेम भाव के साथ निवास करते हैं। जैन समाज की बात की जाए तो यहां दिगम्बर-श्वेताम्बर सभी समाज के लोग बसे हुए हैं। सभी के मंदिर व स्थानक है। यहां लगभग ढाई हजार जैन परिवार निवास करते हैं। जैन समाज के छह मंदिर हैं, जिनमें से पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर सबसे प्राचीन व प्रमुख है। सभी द्वारा महावीर जन्म कल्याणक पर्व उत्साह पूर्वक मनाया जाता है। 'अकोला' की प्राकृतिक स्थिति की बात की जाए तो यह बहुत सुंदर स्थान है, यहां का सबसे प्रमुख देवस्थान है राजराजेश्वरी मंदिर, जिसका इतिहास 'अकोला' के इतिहास से जुड़ा हुआ है, यह 'अकोला' के आराध्य देव कहे जाते हैं, ऐसी ही अन्य कई विशेषताएं हैं हमारे 'अकोला' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही होना चाहिए।

डॉ. जुगल चिराणिया
नेत्र विशेषज्ञ व अध्यक्ष अग्रवाल समाज अकोला
चिराणा झुंझुनू निवासी-अकोला प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२२३६६३३२

डॉ जुगल जी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'अकोला' के संदर्भ में कहते हैं कि 'अकोला' को कॉटन सिटी के नाम से जाना जाता है। यहां सबसे अधिक पैदावार कपास की होती है, इसके अलावा अन्य कई फसलों का भी उत्पादन बड़े पैमाने पर होता है क्योंकि यह कृषी प्रधान क्षेत्र भी है। यहां की आर्थिक स्थिति कृषि पर ही आधारित है। यहां के आराध्य देव राजराजेश्वर जी हैं। 'अकोला' में राजस्थानी समाज की बात की जाए तो 'अकोला' शहर में ही राजस्थानी समाज की आबादी लगभग ४५ हजार के करीब है। यहां लगभग १५-१६ सामाजिक राजस्थानी संस्थाएं कार्यरत हैं। अग्रवाल समाज के भी यहां तीन मुख्य संस्थाएं कार्यरत हैं जिनमें अग्रवाल महिला मंडल, अग्रसेन भवन ट्रस्ट, महाराजा अग्रसेन भवन ट्रस्ट व अग्रवाल मेडिकल सेवा संघ है, इस संघ में लगभग १५० विशेषज्ञ चिकित्सक जुड़े हैं। राजस्थानी समाज की प्रमुख संस्था राजस्थानी सेवा संघ है, जिससे सभी राजस्थानी समाज जुड़ा है, सभी द्वारा यहां दीवाली मिलन, होली मिलन जैसे कई पर्व उत्साह पूर्वक मनाया जाते हैं। यहां राजस्थानी समाज का इतिहास सैकड़ों वर्ष पुराना है, जिनके द्वारा यहां सालासर बालाजी का मंदिर, रामदेव जी का मंदिर, खाटू वाले श्याम जी का मंदिर व राणी सती मंदिर का निर्माण किया गया है, ऐसी ही अन्य विशेषताएं हैं हमारे 'अकोला' की...

डॉ जुगल जी मूलतः राजस्थान के झुंझुनू जिले में स्थित 'चिराणा' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'अकोला' में ही संपन्न हुई है। यहां आप नेत्र विशेषज्ञ के रूप में कार्यरत हैं, साथ ही सामाजिक संस्था से भी जुड़े हुए हैं। अकोला स्थित अग्रवाल समाज के अध्यक्ष पद पर सेवारत हैं। रोटरी क्लब से भी २०-२२ वर्षों से जुड़े हुए हैं, जिसमें अकोला जिले के डिस्ट्रिक्ट सेक्रेट्री व असिस्टेंट गवर्नर भी रहे हैं। अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं। 'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए। 'भारत' शब्द में अपनत्व की भावना है, अतः अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही कहा जाना चाहिए।

- मैंभाहूँ

माहेश्वरी समाज ट्रस्ट, अकोला

माहेश्वरी समाज द्वारा प्रति वर्ष महेश नवमी मनाने हेतु १९६० के दशक में प्रतिवर्ष महेश नवमी महोत्सव समिति का गठन किया गया था। समाज संगठन की एक विधिवत नियमित कार्य करने हेतु इकाई होनी चाहिये, इस संकल्पना से सर्वप्रथम औपचारिक रूप से श्री गौरीशंकरजी मंत्री, श्री श्रीरामजी मुंदडा, श्री अमरचंदजी कासट, श्री शंकरलालजी बियाणी, श्री शंकरलालजी अट्टल एवं उनके सहयोगी युवकों के प्रयास से सन १९६२ में 'महेश सेवा समिति' गठित की गयी, इसके द्वारा विवाह प्रसंगों पर बिछायत सामग्री निःशुल्क उपलब्ध कराना, युवाओं द्वारा इन प्रसंगों पर हर संभव सेवा प्रदान की जानी थी साथ ही महेश जयंती मनायी जानी थी। राजस्थानी छात्रों के लिए आवास निवास की व्यवस्था हेतु छात्रावास निर्माण एवं संचालन हेतु २५ जुन, १९६३ को राजस्थानी छात्रालय समिति अस्तित्व में आयी। इस समिति द्वारा १९६५ में मुर्तिजापुर रोड स्थित किराये के मकान में छात्रालय का संचालन प्रारंभ किया गया, तीन वर्ष पश्चात ३० जुन १९६६ को 'राजस्थानी छात्रालय' नाम से संस्था विधिवत स्थापित हुई।

इस संस्था के प्रथम अध्यक्ष के रूप में श्री शंकरलालजी चांडक एवं प्रधानमंत्री श्री गौरीशंकरजी मंत्री मनोनीत किए गए। राजस्थानी छात्रालय संस्था विधिवत अस्तित्व में आते ही अकोला के तत्कालीन शिक्षाप्रेमी एवं दानवीर श्री राधाकिसनजी तोष्णीवाल द्वारा छात्रालय भवन निर्माण हेतु एक एकर भूमि दानस्वरूप प्रदान की गई, बाद में १९७६ में इसी भूमि से नजदीक ५२०० चौ. फुट भुमी उनके पुत्र स्व. श्री श्रीविष्णुजी तोष्णीवाल द्वारा संस्था को दान की गई।

महेश भवन

'राजस्थानी छात्रालय' संस्था अस्तित्व में आने पर माहेश्वरी समाज संगठन एवं संस्था की विधिवत नींव रखी गयी। शहर में माहेश्वरी समाज के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य से सामाजिक गतिविधियों का स्थायी केंद्र, संस्था, संगठन अस्तित्व में होना चाहिए, इस भावना से 'माहेश्वरी समाज ट्रस्ट' नाम से संस्था २६ अगस्त१९६८ को अस्तित्व में आई। १५ जुलाई १९६९ को पंजीयन होने पर इस संस्था को विधिवत स्वरूप प्राप्त हुआ।

माहेश्वरी भवन

संस्था की गतिविधियों के लिए स्थायी रुप से जगह को ध्यान में रखते हुए स्व. श्री राधाकिसनजी तोष्णीवाल द्वारा न्यु राधाकिसन प्लॉट स्थित स्वयं का बंगला तथा भूमि दान स्वरूप देना स्वीकार किया, उनके पश्चात उनके पुत्र स्व. श्री श्रीविष्णुजी तोष्णीवाल द्वारा उक्त वास्तु तथा भूमि १९६८ से माहेश्वरी भवन हेतु समर्पित की गई, जिसका समाज कार्यकारिणी द्वारा श्री राधाकिसनजी तोष्णीवाल की पत्नी स्व. श्रीमती लक्ष्मीबाई रा. तोष्णीवाल माहेश्वरी भवन नामकरण किया गया। इमारत में आवश्यकतानुसार समय-समय पर समाज बंधुओं के सहयोग से निर्माण कार्य किया गया। १९८० तक 'राजस्थानी छात्रालय' एवं 'माहेश्वरी समाज ट्रस्ट' ये दो संस्थाएं स्वतंत्र रूप से अपना अस्तित्व बनाये हुई थी।

⇨ २००८-११ की कार्यकारिणी द्वारा माहेश्वरी भवन में दूसरी मंजील पर ६ रूम तथा छोटे हॉल का निर्माण किया गया।

⇨ २०११-१४ की कार्यकारिणी द्वारा लोहिया सभागृह का नूतनीकरण २०१४-१७ की कार्यकारिणी द्वारा राजस्थानी छात्रालय का नूतनीकरण तथा लोहिया सभागृह को वातानुकुलित किया गया।

⇨ २०१७-२० की कार्यकारिणी द्वारा माहेश्वरी भवन के प्रशस्त भोजन कक्ष तथा प्रशासनिक कार्यालय को सुसज्जीत एवं वातानुकुलित किया गया। समाज बंधुओं तथा सभी संलग्न संस्थाओं के सहकार्य से बड़े हर्षोल्हास के साथ जुन २०१९ को स्वर्ण जयंती महोत्सव मनाया गया।

With Best Compliments

GURU RAJENDRA METALLOYS INDIA PVT LTD

G R METALLOYS PVT LTD

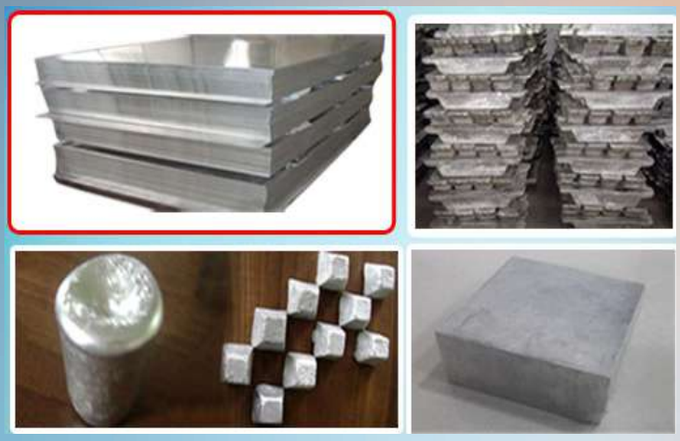

SHAH BABULAL DHANRAJJI JAIN

JAYANT BABULAL JAIN

SHAILESH BABULAL JAIN

Manufactures of Aluminium Alloy Ingot, Aluminium Ingot, Aluminium Notch bar, Aluminium Shots, Aluminium Cubes

8, Gautam Vihar Society, Opp. Sukhsagar Complex, Aroma School Road, Ashram Road, Usmanpura, Ahmedabad, Gujarat , Bharat– 380 013.

जैन समाज एकत्र हो यह है हमारा नारा
इसके लिए चाहिए मात्र आप ही का सहारा

पंजीकृत कार्यालय

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरध्वनि: ०२२-२८५० ९९९९ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना : www.jinagam.co.in

Postal Registration Number - MCN/294/2021-2023
WPP License No. MR/Tech/WPP-354/North/2021-23
Published on 19th August 2022 & Posting on 20th of Every Month
Posted at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059.

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

www.mainbharathun.co.in

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए India नहीं

आह्वानकर्ता

वरिष्ठ पत्रकार व संपादक

बिजय कुमार जैन, मुंबई

मो. 9322307908

राष्ट्रीय अध्यक्ष

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

राष्ट्रीय महामंत्री
शोभा सादानी, कोलकाता
मो. 8910628944

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष
डॉ. गोविंद माहेश्वरी, कोटा
मो. 9414183919

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
निशा लड्ढा, कोलकाता
मो. 9830224300

राष्ट्रीय सह कोषाध्यक्ष
अनुपमा शर्मा (दाधीच), मुंबई
मो. 9702205252

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
सज्जनराज मेहता, चेन्नई
मो. 9444066089

विदेश संयोजक
अरूण मूंदड़ा, ह्यूस्टन-अमेरिका
मो. 009196107106

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड व संपादक, मुद्रक व प्रकाशक बिजय कुमार जैन, बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059 से मुद्रित करवा कर बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059 से प्रकाशित किया गया, टेलीफैक्स-०२२-२८५० ९९९९, अणुडाक-mailgaylordgroup@gmail.com, अन्तरताना - www.mainbharathun.co.in,
द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400093 से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया गया।
RNI No. MAHHIN/2010/48574